सकारात्मक स्पंदन पुष्टि राधा कृष्ण

Vibrant Pushti

हमने कृष्ण को पुकारा तो कृष्ण दौड के आये

क्या कभी कृष्ण ने हमें पुकारा तो हम दौड के गये?

हमने कृष्ण के हर बार दर्शन किये

क्या कभी कृष्ण ने चाहा हमारा दर्शन तो हमने हमारा दर्शन कराया?

नहीं, तो क्यूँ नहीं?

"Vibrant Pushti"

श्री यमुनाजी का रंग श्याम क्यु?

श्री यमुनाजी को श्याम सुंदर श्रीयमुना महारानी क्यु कहते है?

श्रीकृष्ण का रंग श्याम - श्रीराधा का रंग गौर।

प्रीत तो केवल श्रीराधा और श्रीकृष्ण में ही भनी है।

श्री यमुनाजी के साथ श्रीकृष्ण को नही जोडो।

जहां सर्वत्र रंग गुल के एक रंग हो वह रंग श्याम है। यही रंग सदा निखरता है।

हर रंग से श्याम रंग जूडा है। ऐसा ओर कोई रंग नही है जो सब से जूडा हो।

श्रीयमुनाजी जगत के कोई पुन्य या कोई पाप को नही जानते और समझते है।

श्याम रंग सलामत का रंग है, संरक्षण का रंग है। एक बार नयन में बस जाये तो......

श्याम रंग खुद को पहचान का रंग है। विश्वास है, शक्ति है।

"Vibrant Pushti"

हर सतसंग में कुछ तो जानते है।

हर दर्शन में कुछ तो भाता है।

हर यात्रा में कुछ तो चरण रज स्पर्श करते है।

हर सेवा में कुछ तो भाव जगाते है।

हर प्रसाद में कुछ तो रस पीते है।

हर आरती में कुछ तो समर्पित करने का संकल्प करते है।

हर नदी स्नान में कुछ तो शुद्ध करते है।

हर श्रीगुरु शरण से कुछ तो विश्वास धरते है।

बस अब हमें यही करना है कि हमें कुछ जगाना है।

"Vibrant Pushti"

राम है तो कृष्ण है।

राम पधारे तो कृष्ण प्रकटे।

राम चले तो कृष्ण नाचे।

राम खिलाये तो कृष्ण पिलायें।

राम कहे तो कृष्ण पुकारे।

राम त्यागे तो कृष्ण निभाये।

राम संभाले तो कृष्ण लूटाये।

राम एक तो कृष्ण अनेक।

राम मलके तो कृष्ण तिरछे।

राम ढूंढे तो कृष्ण भागे।

राम सरल तो कृष्ण नटखट।

राम पैदल तो कृष्ण दौडे।

राम होले तो कृष्ण डोले।

राम बैठे तो कृष्ण खेले।

राम स्वरुप तो कृष्ण बहुरुप।

राम जीते तो कृष्ण हारे।

राम भटके तो कृष्ण चीटके।

राम मरमीत तो कृष्ण कर्मीत।

राम मधुर तो कृष्ण सुमधुर।

राम सेवक तो कृष्ण प्रेरक।

राम तीर चलाये तो कृष्ण बंसी बजाये।

राम सगुण तो कृष्ण निर्गुण।

राम पुरुषोत्तम तो कृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम।

राम योद्धा तो कृष्ण सारथी।

राम केवट तो कृष्ण सुदामा।

राम शबरी तो कृष्ण विदुर।

राम रावण तो कृष्ण कंस।

राम मारे तो कृष्ण तारे।

राम जागे तो कृष्ण जगाये।

राम संग तो कृष्ण रंग।

राम के पीछे सीता तो राधा के पीछे कृष्ण।

राम हसाये तो कृष्ण रुलाये।

राम सीधे तो कृष्ण बांके।

राम रीति तो कृष्ण प्रीति।

राम स्तुती तो कृष्ण विश्रुती।

राम शिखाये तो कृष्ण भजाये।

राम सूर्य तो कृष्ण चंद्र।

सीताराम तो राधेश्याम।

जगत में कितने प्रकार के मनुष्य है, हर मनुष्य के अंदर कोई एक रीति है जो उन्हें जीवन जीने की प्रेरणा करता रहता है। यही प्रेरणा में उत्कृष्ट विचार धारा से जोडता जाय तो उनका जीवन त्रिवेणी संगम से खुद को क्षीरसागर में समर्पित करेगा।

"Vibrant Pushti"

सेवा - साधना - चिंतन ऐसे साधन है जिससे आंतरिक शक्ति जाननी और जागृत करनी होती है।

मनुष्य जीवन की ये अमूल्यता है। यही समझना भी एक खुद की जागृतता है।

"Vibrant Pushti"

हमारे विचार, हमारा कर्तव्य, हमारा विश्वास से ही हम श्री प्रभु को मानते है पहचानते है।

हां! हम यही विचार, यही कर्तव्य बार बार बदले तो हम योग्य विचारशील, योग्य कर्तव्यनिष्ठ, योग्य विश्वसनीय नही है।

इससे हमारी योग्यता नही संस्कृत होती है और हम भटकते रहते है। न हम किसीके न कोई हमारा।

न कोई राह है न कोई ठिकाना, बस केवल भटकना।

सच कहे तो हम पूरा जीवन भटकते है।न तो शुद्धता पाते है और अस्थिर रहते है।

"Vibrant Pushti"

एक सोच से भी हम खुदाई समझ सकते है।

एक कर्म से भी हम खुदा कि राह देख सकते है।

एक प्रार्थना से भी हम खुदा को पैगाम दे सकते है।

एक सेवा से भी हम खुदा को स्पर्श कर सकते है।

"Vibrant Pushti"

आज एक ऐसा एहसास हुआ, पुरुष अपनी माँ, पत्नी, बेटी और प्रियतमा को सत्य, पवित्र, शुद्ध, सरल और योग्य व्यवहार या योग्य संस्कृत साथ नहीं दे तो खुद बरबाद ही होता है। सच कहे तो श्रीप्रभु ने यही रचना और जीवन शैली भी केवल एकात्म होकर ही परमात्मा पा सकते है।

"Vibrant Pushti"

जहां भक्ति और ज्ञानी आत्मीय तत्वों प्रकटते है वहां श्री गुरु, श्री संत, श्री भक्त श्रीप्रभु को अपनी पास खींच कर सर्वत्र आनंद और सत्य का प्रकाश फैलाते है।

"Vibrant Pushti"

मनुष्य की शक्ति

श्रद्धा - ज्ञान - भक्ति - विश्वास - संकल्प - विचार - कर्म - गति - तेज - धैर्य - दान - सामर्थ्य - साक्षर - संस्कृति - शिक्षा मौन - निडर - अखंड - स्थिर - सत्य - दया - करुणा - बलिदान - कीर्ति - एकाग्रता - शांत - सरल - विनम्र - विनय -विवेक - प्रीत - संरक्षण - जागृत - युद्ध - यौवन - समांतर - शिस्त - निर्माण - निर्णय - निर्मोही - शुद्ध - दीर्घ - आयुस्मरण - चेतन - न्याय - निखालस - निर्गुण - स्वस्थ - आत्म - सम्मान - संयोग - विरह - सकारात्मक - ऊर्जा - विच्छेदन - विकास - नमन - निरंतर - निश्चय - निर्भय - वीर्य - विजय - आनंद - परिवर्तन, आदि इतनी शक्ति है - जो हमें पहचान कर योग्य उपयोग करना है।

सच ही समझना हम शक्ति का प्रयोग कैसे करते है?

"Vibrant Pushti"

अतूटता में बिखरता न थी।

द्रडता में साधारणता न थी ।

निश्चितता में अनिश्चितता न थी।

विचारों में सामान्यता न थी।

संस्कार में अशुद्धता न थी।

निडरता में अकृत्यता न थी।

फिर भी हम न कर पाये। क्या है ये जगत की रीत की हम खुद को संभल न पाये।

कैसे है ये रिश्ते, कैसी है ये रीत साथ मिलकर रहने की?

बिखर जाये।

अनिश्चित हो जाये।

सामान्य हो जाये।

अशुद्ध हो जाये।

अकृत्य हो जाये।

"Vibrant Pushti"

श्रीप्रभु को जगाये.......

रात का विरह.....

श्रीठाकोरजी के दर्शन की तीव्रता, आतुरता, अभिलाषा......

नयन खुलते ही श्रीकंठी के दर्शन और स्पर्श।

श्री ब्रह्मसंबध करने की सलामती।

श्रीयमुनाजी निकट की कक्षा।

कुटुंब के हर सदस्य में गोप गोपी भाव।

तन, मन और धन शुद्धि स्नान।

स्व धारण - स्व साक्षर तिलक।

आंतर - बाह्य शुद्धि चरणामृत पान।

निकुंज में मातृ, पितृ, सखा सखी, अष्ट सखा, गाय, भकत, पशु - पंखी संग सुमधुर जगाने का पद।

श्रीप्रभु का विनंती स्वीकार हास्य।

श्रीप्रभु का अंगडाई सभर जागने का संकेत।

सर्वे स्पर्शीय परम आत्मजनो का अति उत्साह - उमंग के साथ नाच।

श्रीप्रभु के विरह मुक्त पलके खुलना।

"श्री वललभाधिश की जय"

"श्री श्याम सुंदर श्री यमुना महाराणी की जय"

"श्री गिरिराज धरण की जय"

"श्री निकुंज नायक गौ प्रतिपाल श्री श्रीनाथजी की जय"

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"

सत्य तो यह है कि

नहीं कहीं छल कपट है

नहीं कहीं बेइमानी है

नहीं कहीं जूठ है

नहीं कहीं अन्याय है

नहीं कहीं विश्वासघात है

नहीं कहीं दुराचार है

नहीं कहीं असमंजस है

नहीं कहीं असत्य है

नहीं कहीं दुख है

नहीं कहीं नफरत है

नहीं कहीं असलामती है

जो कुछ भी है वह हमने ही बनाया है, हमने ही रचा है।

खुद को शैतान घडते है और दूसरे को इनसान बनाने फिरते हो।

कैसी है ये रीत मनुष्य की?

"Vibrant Pushti"

पुष्टिमार्ग के पंच मूल रुप तत्वों

अग्नि - श्री वल्लभाधीशजी

जल - श्री यमुनाजी

वायु - श्री अष्टसखा

पृथ्वी - श्री गिरिराजजी

आकाश - श्री सुबोधिनीजी

हर जीव तत्वकी उत्पत्ति पंच महाभूत तत्वों से हुई है। हम हमारा जीवन यही पुष्टिमार्ग के यही पंच मूल रुप तत्वों से सिंचन करे तो पुर्ण पुरुषोत्तम से ब्रह्मसंबंध पाये।

"Vibrant Pushti"

હું રંગાઈ જાવું રંગમાં

હું રંગાઈ જાવું રંગમાં

શ્રીનાથજીનાં રંગમાં, શ્રી વલ્લભનાં પુષ્ટિ પથમાં

હું રંગાઈ જાવું રંગમાં.......

અષ્ટસખાનાં પદ સ્મરિને ભાવ જગાડું જીવનમાં

ભાવ જગાડું જીવનમાં

આઠે પ્રહરનાં દર્શન કરીને

શ્રીકૃષ્ણ નિહાળુ જગતમાં

શ્રીકૃષ્ણ નિહાળુ જગતમાં

તન મન ધનથી હું રંગાવું

તન મન ધનથી હું રંગાવું

રંગાવું પુષ્ટિ રંગમાં

હું રંગાઇ જાવું રંગમાં....

સેવા પધરાવી શ્રીનાથજી સ્પર્શ પામી

ચિત્તડું ચોળુ પુષ્ટિમાં

ચિત્તડું ચોળુ પુષ્ટિમાં

શ્રીગિરિરાજની પરિક્રમા કરી

પ્રીત પાન શ્રીયમુનાજી

પ્રીત પાન શ્રીયમુનાજી

ષોડશ ગાઇને વિનવું વલ્લભને

ષોડશ ગાઇને વિનવું વલ્લભને

સદા રહે તું સંગમા

હું રંગાઈ જાવું રંગમાં

શ્રીનાથજીના રંગમાં

શ્રી વલ્લભનાં પુષ્ટિ પથમાં

"Vibrant Pushti"

नटखट खटखट करे कनैयो ।

प्रीत रंग रंगे घनश्याम ।।

छेडे बंसी तान यमुना तीर ।

बावरी हुई मैं घनश्याम ।।

पैजनीया बाजे छननन छननन ।

पूकारे विरह घनश्याम ।।

नैन मीले पर चैन न पावें ।

तन मन है घनश्याम ।।

कब होंगे एक दिल साँवरिया ।

थाम ले अब घनश्याम ।।

"Vibrant Pushti"

हम बार बार अपने धर्म के सिद्धांतों का सत्संग करते है, और हमारे जीवन में अपनाने का प्रयत्न करते है।

यही सिद्धांतों हम हमारे कुटुंबमें कहीं परिवर्तनता से अपनाते है जिससे द्रडता नहीं जागती है और हम हमारे कुटुंब के साथ भटक जाते है। न रहता है धर्म, सिद्धांत और संस्कृति केवल रहता है एक दिखावा।

क्या यही है हम और हमारा कर्तव्य?

यह कोई कलयुग का प्रभाव नहीं है, यह तो हमारा कर्म का परिणाम है।

सिद्धांत और संस्कृति द्रडता से अपनाना ही हमारी योग्यता है।

"Vibrant Pushti"

परम सत्य

क्या किसीका मन चोरी हुआ है?

क्या किसीका तन चोरी हुआ है?

क्या किसीका दिल चोरी हुआ है?

सच कहूँ नहीं हुआ है।

चोक्कस नहीं हुआ है।

"Vibrant Pushti"

"चल सखी! सौतन के घर जाये।

मान घटे तो क्या घट जाये?

पिया के दर्शन तो पाये"

प्रीत की रीति निराली, ऐसी रीति कैसे पाये?

जो रीति में जगत छूटे पर भव सागर पार कर जाये।

कृष्ण ही हमरे प्रियतम हो तो ऐसी रीति हम पाये।

कृष्ण ही हमें प्रीत जताये, कृष्ण ही हमें जगाये।

कृष्ण ही हमें संवारे, कृष्ण ही हमारे साँवरे।

"Vibrant Pushti"

घूमते घूमते ही जानते है कि यह सृष्टि की महत्वता और हमारी महत्वता क्या है?

हम मनुष्य ही सृष्टि को सुंदर करते है और खुद को समझते है। समझ समझ के ही संस्कृति घडनी है और सृष्टि को साक्षर करनी है।

यही हमारा अमूल्य कर्तव्य है।

"Vibrant Pushti"

खुद ने बनायी दुनिया में बहुत कुछ होता है।

इसलिये तो हम बिकते है और खरीदाते है बाजार में।

पर खुदा ने रचाई दुनिया में केवल प्यार होता है।

जहां सोदा नहीं पर लूटाते है

हर पल विश्वास, हर पल ईमान,

हर पल साथ, हर पल खुद भगवान।

"Vibrant Pushti"

एक ही सूर्य है

एक ही पृथ्वी है

एक ही चंद्र है

एक ही शरीर है

तो भी कितनी परिवर्तनता!

भिन्न भिन्न जीवन

भिन्न भिन्न विचार

भिन्न भिन्न कार्य

भिन्न भिन्न धर्म

भिन्न भिन्न रिवाज

शायद यही ही समझ है

जिससे हम सर्वे है बेकरार!

जिससे सदा है सर्वे को कोई इंतजार!

जिससे जीते है मारामार!

क्या यही है जीवन का सार?

"Vibrant Pushti"

प्राकट्य "श्री वल्लभ"

श्री कृष्ण में समाये.

श्री यमुनाजी स्पर्श पमाये.

श्री गिरिराजजी गती कराये.

श्री ब्रह्मसंबंध से जुडाये.

श्री अष्टाक्षर मंत्र माधुर्य रस पीलाये.

श्री पुष्टि प्रीत सेवा रीत से खुद की पहचान कराये.

पल पल दर्शन, मनोरथ, उत्सव से तन मन धन सिद्ध कराये.

दंडवत प्रणाम!

"जय श्री वल्लभ"

"Vibrant Pushti"

यमुना के तट पर

गिरिराज के शिखर पर

वृंदावन के वट वृक्ष पर

पायल की झंकार पर

बंसी की धून पर

प्रीत के रंग पर

रास रचाये कान्हा

हमें पुकार कर

जीवन का संगीत यही है।

जीवन की रीत यही है।

जीवन की मधुरता यही है।

खेले पल पल हम तुमसे ऐसे

जीवन गाये, जीवन नाचे

बस! यही है जीवन जीत।

"Vibrant Pushti"

जीवन जीने का है या बिताने का है?

जीवन में रहना है या छोडना है?

जीवन रंगना है या रंगाना है?

जीवन जगाना है या देखना है?

जीवन तैराना है या तैरवाना है?

"Vibrant Pushti"

हिंदुस्तान में श्री प्रभु के 24 अवतार हुये। क्यु?

हिंदुस्तान में अनेक ऋषि हुये। और कहीं यज्ञ किये। क्यु?

हिंदुस्तान में अनेक धर्म प्रकट हुये। क्यु?

हर हिंदुस्तानी को धर्म धारणा के लिये क्यु असमंजस में रहना होता है?

कुछ समझना है। कुछ करना है। कुछ करेंगे ही।

अनेकता में एकता की एकता में अनेकता रखते है?

"Vibrant Pushti"

"प्रार्थना"

प्रार्थना हमारी सत्यता है, संस्कृति है, पहचान है।

प्रार्थना केवल योग्यता से ही होती है।

प्रार्थना केवल जोडती है। प्रार्थना में कोई भी कैसे भी जुड सकते है।

प्रार्थना मन और आत्मा को ही जोडती है।

प्रार्थना भौतिक सुख के लिए नहीं है।

प्रार्थना वरदान है, बलिदान है, संरक्षक है।

प्रार्थना का फल नहीं होता, प्रार्थना शक्ति है।

प्रार्थना निष्फल और निरर्थक नहीं है।

प्रार्थना तत्व है, निर्मल है, निर्माण है, निर्गुण है।

प्रार्थना तपश्चर्या है, तटस्थ है, स्थिर है।

"Vibrant Pushti"

बार बार सत्संग करते है, श्री प्रभु ने

मयूर पंख को अपनाया,

वेणु याने बंसरी अपनायी,

तुलसी माला अपनायी,

अति उत्तम है।

कभी हमने मयूर पंख का स्पर्श किया है? स्पर्श से कोई अनुभूति पायी है? और इनमें कुछ देखा है?

कभी हमने वेणु का स्पर्श किया है? और इनके स्पर्श से कोई अनुभूति पायी है?

तुलसीजी को बार बार चूटते है, हर चूटन पर कुछ हुआ? हर प्रसाद मे तुलसीजी को मुख में आरोगते हुए कुछ संकेत पाया?

नहीं नहीं। कयुं?

"Vibrant Pushti"

नयन की पलकें के कोने में एक भीगी भीगी सी धारा बह रही थी।

धारा मुखडे को स्पर्श करके कह रहा था।

आज दर्शन में अपने नयन से कहना - स्थिर रह कर उन्हें बसाना है जो यह धारा को श्री प्रभु चरण स्पर्श पाना है।

बहती धारा की यह तरस ही मेरी परम प्रार्थना है।

"Vibrant Pushti"

"मयूर पंख"

जैसे देखा तो मन में इतने रंग उभर आये की हर रंग रोम रोम में गुल ने लगा। हमारी धडकन के साथ हमारा लहु भी मिश्रित होने लगा। धीरे धीरे मेरा ये तन का रंग परिवर्तित हो गया। हम सोच में पड गये ......यह क्या हो रहा है?

धीरे धीरे पूरा शरीर सांवला हो गया।

ओहहह! वो साँवरिया और मैं भी भयी साँवरि!

उतने में ही एक मयूर पंख उडता हुआ मेरे अंग लग गया.....

"Vibrant Pushti"

जगत की किताब में अनगिनत पढा पर क्या कुछ शिखा या क्या कुछ पाया वह समझ नहीं पाया।

हर पन्ना कुछ ऐसा कहते थे

खुद के लिये ही हर अक्षर है

खुद के लिये ही हर सिंचन है

अब जाग कर पाना तेरी काबिलियत है।

तु ही इश्वर, तु ही भक्त, तु ही जीवन है।

तेरे सहारे जगत है, और

खुद के सहारे ही परंब्रह्म है।

"Vibrant Pushti"

संत - भक्त - ऋषि - आचार्य - माता - पिता के लिए कोई अश्लील, अशुद्ध, स्वार्थ, और हीन विचार और व्यवहार या क्रिया करते है उन्हें उसी पल शाप लगता है।

यह अद्वैत सिद्धांत है और परम सत्य है।

यह शाप मनसे नहीं पर आत्म ज्योति से प्रकट होता है।

मन हमें टाल देता है पर आत्म ज्योति कभी नहीं टालती वो तो परिणाम देती ही है।

"Vibrant Pushti"

"मैया जीये तेरे कुछ भेद उपज है

मुझे जानयो परायों जायो"

आजकल यही रीत है।

क्युं दूर करते है, कयुं दूर रहते है।

एक सी जन्म, एक सी मृत्यु,

एक सी हवा, एक सा पानी,

एक सी पृथ्वी, एक सा सूर्य,

तो भी यह कैसा जीना जानी।

अब तो जागे खुद के विचारों से

अब तो करे खुद के संकल्पों से।

"Vibrant Pushti"

जैसे हस्त में पकडा ..... कितना कोमल, कितना मधुर।

जैसे जैसे हम स्पर्श पाते गये वैसे वैसे वह हमारे दिल में उतरता गया।

हमें एक उम्मीद पायी कि अब श्री प्रभु पधारेंगे।

कितना मुलायम! मयूर पंख का धागा हमें बांधता गया।

जन्म जन्म का ऋण तूटता गया।

तब आत्म में प्रकाश जागा ओहहह! कितना अदभुत है मयूर पंख!

श्री प्रभु के धारण का महात्म्य कितना उच्च है।

वाह! मेरे प्रभु!

'Vibrant Pushti"

श्रीप्रभु दर्शन कयुं है?

श्रीप्रभु दर्शन कहीं प्रकार के है।

श्रीप्रभु गृह सेवा दर्शन

श्रीप्रभु मंदिर दर्शन

श्रीप्रभु सामान्य दर्शन

यही सर्वे दर्शन में हम बार बार झाखीं करते है। इससे हम आनंद पाते है, सुख पाते है, सांत्वना पाते है। पर सबसे उंची आध्यात्मिकता यह है कि हम हमारे अहंकार का नाश करते है। अगर यह नहीं होता है तो हम दर्शन नहीं करते है।

"Vibrant Pushti"
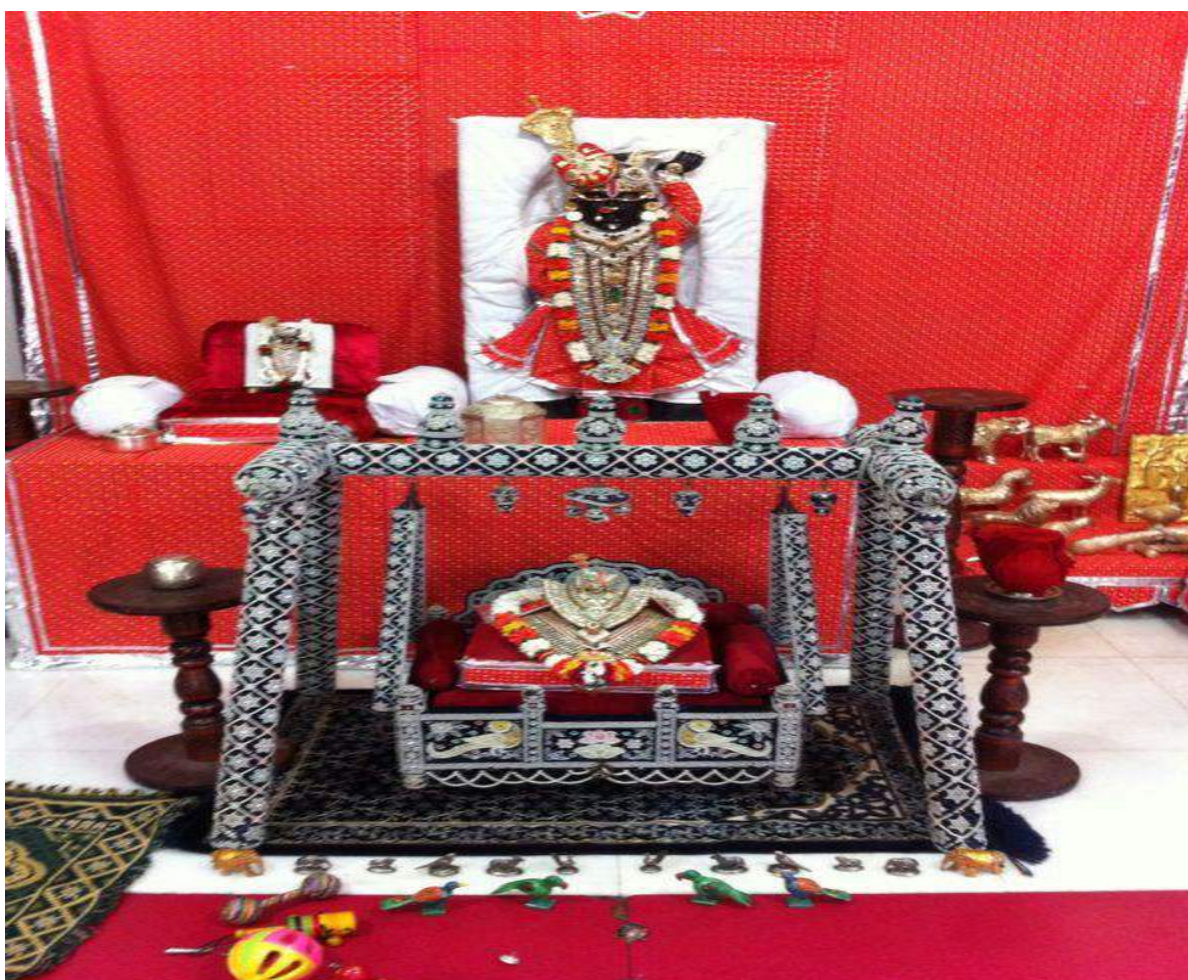
"आशिर्वाद"

हिंदु संस्कृति की अनोखी रीत है। जिससे जीवन का कोई आधार पाया जाता है।

आत्मीय उमंग और आत्मीय धारा सिंचित होती है।

हम बार बार आशिर्वाद पाते है और देते भी है।

यह पाना और देना यह हमारी आंतरिक शक्ति से उत्कृष्ट होता है। सफलता और निष्फलता पाने वाले और देने वाले पर निर्भर करता है।

सच कहे तो यह एक उच्च प्रमाण है अपनी खुद की पहचान का, आशिर्वाद के प्रमाणित से ही हम समझ सकते है कि हम कहाँ है?

कहीं आशिर्वाद लिये और दिये फिरते है न कोई असर न कोई प्रभाव बस केवल क्रियाहीन करते रहना, यही हम है?

यही हमारी शक्ति है?

यही हमारी पहचान है?

यही हमारी सफलता है?

ओहह! हर आशिर्वाद पाने और देने वाले को सोचना चाहिए।

ऐसे बिन समझे बांटते रहते है और बिन समझे पाते रहते है।

क्या है हम? ओहह! श्रीप्रभु!

"Vibrant Pushti"

"भाग्य" में होगा तो मिलेगा!

यह भाग्य क्या है?

क्या हमें अपने आप कुछ मिलता है?

किसको मिला है? नहीं मिल सकता, चोककस नहीं मिलता है।

जगत में किसी को अपने आप कुछ भी नहीं मिलता है।

जो भी कुछ मिलता है तो केवल भाग्य से ही मिलता है।

और जो नहीं मिलता है वह दुर्भाग्य है।

भाग्य केवल श्री प्रभु ही प्रदान करते है, भाग्य हमारे योग्य कर्म से ही रचाता है, घडाता है जिसमें जगत नियंता का संयोग है और दुर्भाग्य हम खुद रचते है, घडते है।

जब हम हमारे खुद के उपर संसार की वैचारिक धारा से अति विश्वास करके जगत नियंता की अवहेलना करते है तब दुर्भाग्य उत्पन्न होता है, और यही विनाश करता है।

"Vibrant Pushti"

"मुरली"

क्या है? क्युं है? जबसे श्रीप्रभु के हस्त ने स्पर्श किया, धारण किया तबसे न दूर किया। कैसी है ये अखंडिता?

श्याम संग ऐसी जुडी न कभी दूर भयी।

कैसी है ये रीत है ये पल पल प्रीत भयी।

ओ मुरलीधर! मुरली धारण सृष्टि पालक क्या क्या लीला रचायी?

हम गौपालक हमारी गौ चुरायी।

वाह! मेरे प्रिये! वाह! मेरी मुरलीधरन! बावरी मैं हो गयी।

"Vibrant Pushti"

सूर्य के किरण क्या है?

चंद्र की चाँदनी क्या है?

पृथ्वी की रज क्या है?

आकाश के तारे क्या है?

सागर की बुंदे क्या है?

वनस्पति के पत्ते क्या है?

हवा के तरंगें क्या है?

संगीत के स्वर क्या है?

अक्षर के अर्थ क्या है?

जीव की ज्योति क्या है?

पंखी का कलरव क्या है?

ब्रह्मांड का तत्व क्या है?

हर जीव में जागता विचार क्या है?

प्रकृति को जोडता श्वास क्या है?

कभी सोचा है? चोककस सोचो और कहो।

चोककस कहो।

जो भी ज्ञान हो या ध्यान हो या कोई भी भाव हो कहो।

कोई भी वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, आचार्य, भक्त, गुरु, शास्त्री को कह कर भी कहो, चोककस प्रयत्न करो।

विनंती करते है।

"Vibrant Pushti"

" जय श्री कृष्ण "

"हित" या ने सर्वोच्च प्रीत।

श्रीप्रभु ने प्रीत की कही पराकाष्ठा जतायी है।

श्रीप्रभु, भक्त और भक्ति यह कक्षा से उपर "हित" प्रकट होता है।

हम कहाँ है? जान लो। हमें कहाँ पहुँचना है पहचान लो।

"जय श्री वल्लभ"

"जय श्री कृष्ण"

"Vibrant Pushti"
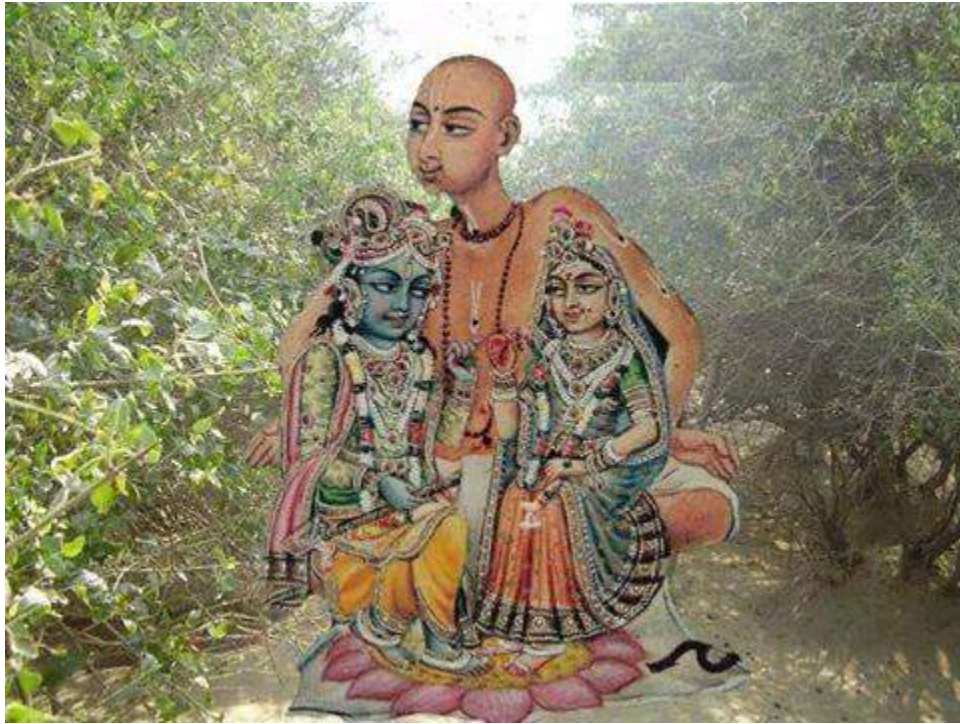
"मधुराष्टकम्"

श्री वल्लभाचार्यजी ने अति अलौकिक दर्शन और स्पर्श कराया है।

परम ब्रह्म क्या है, क्यु है, कैसे है वह अनुभूतिसे हमें पुष्टि मार्ग से ऐसा लूटाया है जैसे बंसरी के सुर से श्री कृष्णने गोपियों के लिये लूटाया था।

हर अक्षर, हर स्वर में केवल पुष्टि रंग है। हमें रंगाना आना चाहिये, हमें स्पर्श करने की योग्यता केलवना चाहिये।

यह योग्यता "मधुराष्टकम्" के हर अक्षर को समझते समझते मधुर होना है।

रचते रचते श्री वल्लभ श्रीश्रीनाथजीमय या ने दोनों एक रुप हो गये थे। यही रुपता में ही पुष्टि मार्ग का प्राकट्य हुआ था। जो हमारे लिये अलौकिकता प्रदान करता है।

"Vibrant Pushti"

"निडरता"

निडरता का अर्थ है योग्यता से जीना।

बार बार कहते है हम ने निडरता से कह दिया - कर दिया।

क्या कह दिया और क्या कर दिया?

हाँ! जिसमें सत्य हो, सिद्धांत हो, न्याय हो, योग्य हो जिससे जिसने कहा वह जागृत हो और जिसे सुना वह जागृत होना ही चाहिए, तो योग्य है।

ऐसे तो कितने कहते है - सुनते है और जीते है।

निडरता तो तब ही जागृत होती है जब हमारा जीवन सरल खुमारी भरा हो जिसमें न किसीकी अवहेलना न हो और उत्तमता प्रदान करता हो।

निडर कौन है? संत, गुरु, आचार्य, प्रज्ञानी, मौनी, धैर्यवान, सत्य प्रिय।

"Vibrant Pushti"
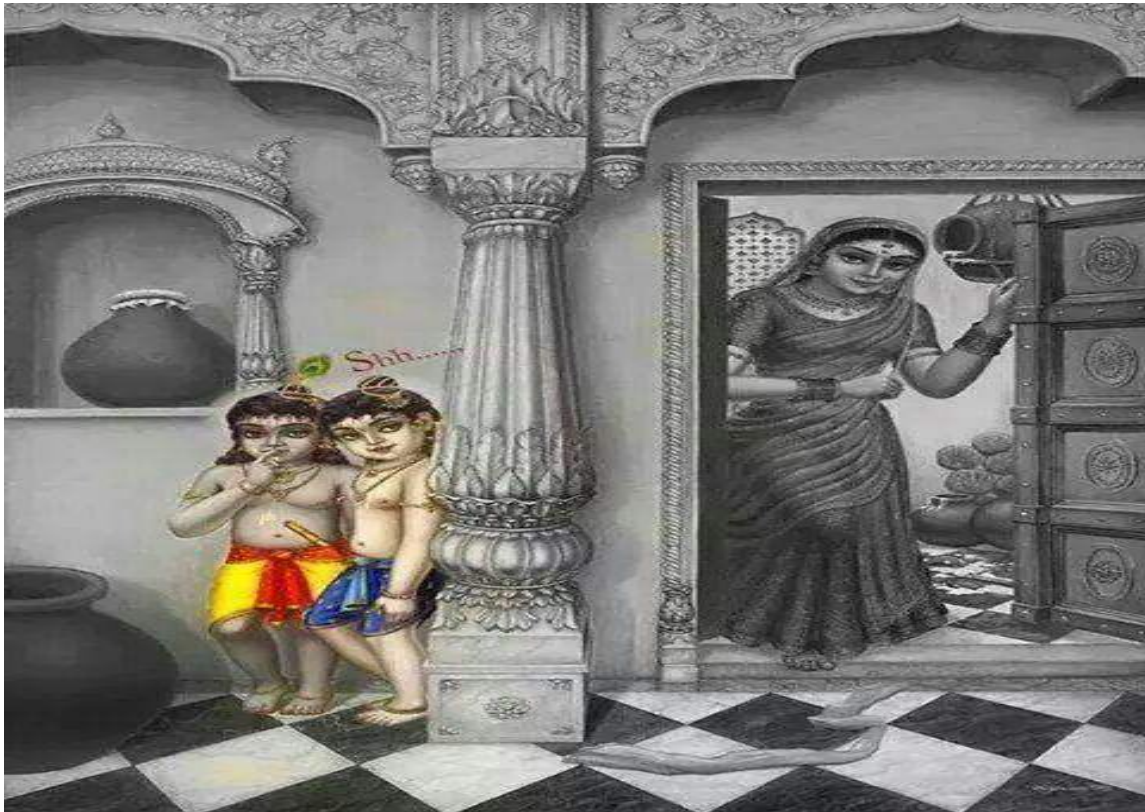
श्याम सुंदर तुम श्याम हो तो सुंदर हो

माधव मोहन तुम मोहन हो तो माधव हो

राधा कृष्ण तुम राधा हो तो कृष्ण हो

मुकुंद मुरारी तुम मुकुंद हो तो मुरारी हो

मुरली मनोहर तुम मुरली धारी हो तो मनोहर हो

द्वारकाधीश तुम हमारे मन के द्वार पर बिराजते हो द्वारकाधीश हो

साँवरिया तुम साँवरे तम हो जब हमे साँवरा रंग से हमें रंगते हो

बांके बिहारी तुम बांके तब हो जब हमारा जीवन मे आनंद छा जाये।

"Vibrant Pushti"

जीतने भी आत्मीय लीलामय तत्वों (सखीओ-सखाओ-ऋषिओ-गोप गोपीओ-संतो-भक्तों) श्रीकृष्ण जन्म से लेकर श्रीकृष्ण का गौलोक उर्धवागमन तक उनके साथ रहे और साथ पहुंचे।

श्रीकृष्ण की अनेक लीला के साथ रहे। हर लीला में हर एक आत्मीय तत्वों अपनी भूमिका से गोकुल, वृंदावन, नंदगांव, बरसाना और मथुरा को व्रज में प्रस्थापित कर दिया। यह व्रज ही जगत श्रीयमुना की धारा से याने भक्ति की धारा से सिंचित हुआ।

तब ही प्रीत की धारा प्रकट हुई। यही श्रीकृष्ण का गौलोक धाम रच गया, आज हमें पल पल के लिये जागृत करके पुष्टि प्रीत धारा से सिंचित करती है।

"Vibrant Pushti"

जीवन में ऐसे ऐसे संयोग रचाते है जिससे हमें पहचान होती है की कैसे कैसे तत्वों होते है और कैसी कैसी प्रकृति होती है।

हर प्रकृति से ही हमें कैसे जुडना समझ आता है। यही समझ से ही हम हमारा विकास करते करते हममें द्रृडता बढा सकते है।

यही द्रृडता ही हमें हर कठिनाई भरी पर परिस्थिति में राह दिखाती है।

इस के लिये जीवन निडर और समृद्ध होता है।

"Vibrant Pushti"

हुं बंसरी तमारी

घनश्याम बनी आवो

हुं बंसरी तमारी

हुं धरती पर अवतरेली

शोधु कृष्णने रजमां

ओ रजमां वसनारा

घनश्याम बनी आवो

हुं बंसरी तमारी

पंच महाभूतों थी हुं रचेली

शोधु श्रीनाथजी ने तत्वों मां

ओ तत्व प्राण मारा

घनश्याम बनी आवो

हुं बंसरी तमारी

हवे ना तरसावो

हवे ना तडपावो

ओ क्षण विरह हरनारा

घनश्याम बनी आवो

हुं बंसरी तमारी

श्री वल्लभ शरणे पहोंची

पुष्टि प्रीत थी बांधी

ओ पुष्टि प्रीतथी बांधनारा

घनश्याम बनी आवो

हुं बंसरी तमारी

हुं पुष्टि संगमां जोडाई

हुं पुष्टि रंगमां रंगाई

ओ पुष्टि रंगनारा

घनश्याम बनी आवो

हुं बंसरी तमारी

हवे ना विसरावो

हवे ना भुलावो

ओ भवना प्रियतम प्यारा

घनश्याम बनी आवो

हुं बंसरी तमारी।

"Vibrant Pushti"

इतनी असमंजस! बार बार परिवर्तन! बार बार सोचना!

क्या है ये काल का चक्र?

क्या है ये माया का प्रभाव?

हम ऐसे चक्र और प्रभाव से कब छूट सकते है, जब हम हमारी सत्यता समझ सकते है, हमारी यहां जन्म धारण करने की सार्थकता समझ सकते है, यह समझ ने के लिये ही धर्म, संस्कृति, शिक्षा और कर्तव्यता अपनानी होती है। यह हमें खुद को ही करना होता है, चाहे कोई हमारे लिये कितना भी प्रयत्न करें।

"Vibrant Pushti"

"वेणु मधुरम्"

वेणु से ही श्री प्रभु पुरे।

वेणु से ही श्री सृष्टि पुरी।

वेणु से ही श्री सेवा पुरी।

वेणु से ही श्री प्रीत पुरी।

वेणु से ही जीवन पुर्ण।

वेणु से ही ज्ञान पुर्ण।

वेणु से ही भक्ति पुर्ण।

वेणु से ही विरह पुर्ण।

वेणु से ही मुक्ति पुर्ण।

वेणु से ही क्षण क्षण मधुर।

वेणु से ही रज रज मधुर।

वेणु से ही हर विचार मधुर।

वेणु से ही हर धडकन मधुर।

वेणु से ही हर किरण मधुर।

वेणु से ही हर स्पर्श मधुर।

वेणु से ही हर सुर मधुर।

वेणु से ही हर स्वर मधुर।

वेणु से ही प्रीत साँवरे,

वेणु से ही हम बांवरे।

"Vibrant Pushti" " राधे "

मन को परौना - या ने मन को किसके साथ परौना। कैसे परौना? क्यूँ परौना?

परौना या ने जुडना, एक एक के साथ जुटाना। एक जैसा एक होना।

यह सब ऐसा कैसे धागे में परौना है?

और यही जब एक माल्याजी में रुपांतर होना ही हमारी सार्थकता है। तब ही श्रीप्रभु के समर्पित होने की क्षमता धारण करते है।

"Vibrant Pushti"

न कहीं पाया है, पर बार बार सुना है,

न किसीने बताया है, पर बार बार देखा है,

बार बार जताने की कोशिश की है,

फिर भी वह हमसे दूर है,

कभी कुछ करते है, कहीं कुछ करते है,

फिर भी हमें तडपाता है,

कैसी लीला रचायी है कि जितना ज्यादा तडपते है,

उतना वह मुस्कुराता है।

क्या करे और कैसे करे?

कयुं की वह पल पल हमें पुकारता है।

जग कहे कृष्ण उन्हें पर वह तो मेरा साँवरिया है।

"Vibrant Pushti"
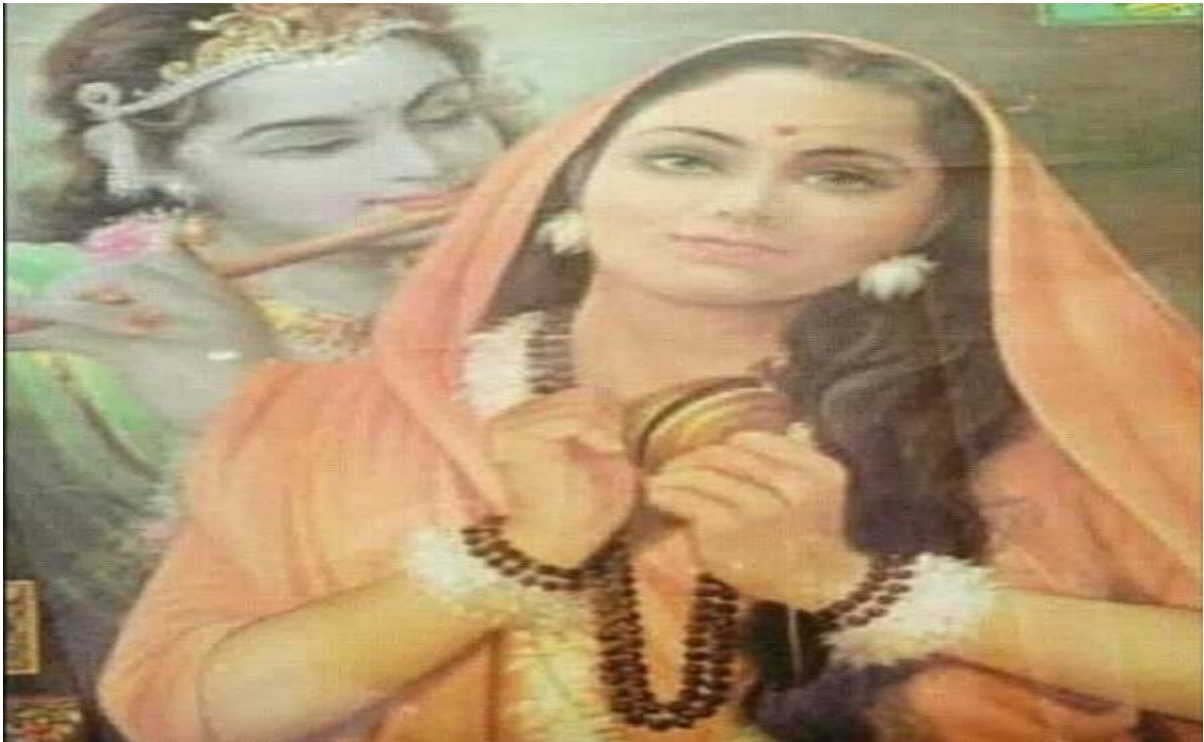
बहोत कुछ कह दिया,

बहोत कुछ सुन लिया,

कभी किसीने मेरी सुनी?

सुनी तो ऐसा कहे दिया

ओहह! कितनी मधुर है

यह मुरली की तान

क्या सूर है जो हमें खींचती रहती है।

कितना आनंद जता रही है।

मग्न हो जाते है, खो जाते है

सुध बुध नही रहती

पर

कभी मेरी भी विरहता जानी है?

कभी मेरे सूर सुने है?

कभी मेरी आतंरिकता जानी है?

कृष्ण कृष्ण करते हो पर हम क्या क्या करे?

"Vibrant Pushti"

बांसुरी वैष्णव है।

पृथ्वी की रजे रज से बीज रोपण किया।

नदी के बुंद बुंद से सिंचन किया।

आकाश के टीम टीम ताराओं ने बंधारण बांधा।

सूर्य के किरणों ने तेज सरजा।

वायु की लहरों ने सरगम रची।

ओहह! मधुरी सी बांसुरी ने सारी सृष्टि जगाई।

"Vibrant Pushti"

यह सृष्टि की परंपरा है। यह परंपरा वह ही समज सकते है जो सृष्टि के सर्जनहार को पहचानते है। वह सर्जनहार को श्रीप्रभु की रचाई हुई रीत से ही खुद को सुद्रड सिंचन करते है।

यही रीत से ही प्रकृति का संतुलन करते है। यह समजना अति आवश्यक है।

"Vibrant Pushti"

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हर अक्षर आध्यात्मिक है।

हर सांस आध्यात्मिक है।

हर जीवन आध्यात्मिक है।

हर संस्कृति आध्यात्मिक है।

हर सृष्टि आध्यात्मिक है।

हर धर्म आध्यात्मिक है।

हा! केवल हमारे विचार और क्रिया को अक्षर कि, सांस कि, जीवन कि, संस्कृति कि, सृष्टि कि, धर्म कि सही पहचान करते रहेना है, तो चोककस सत्य कि अनुभूति होगी ही और सुद्रड शक्ति पायेंगे जो हम सदा शांत और आनंद पायेंगे।

"Vibrant Pushti"
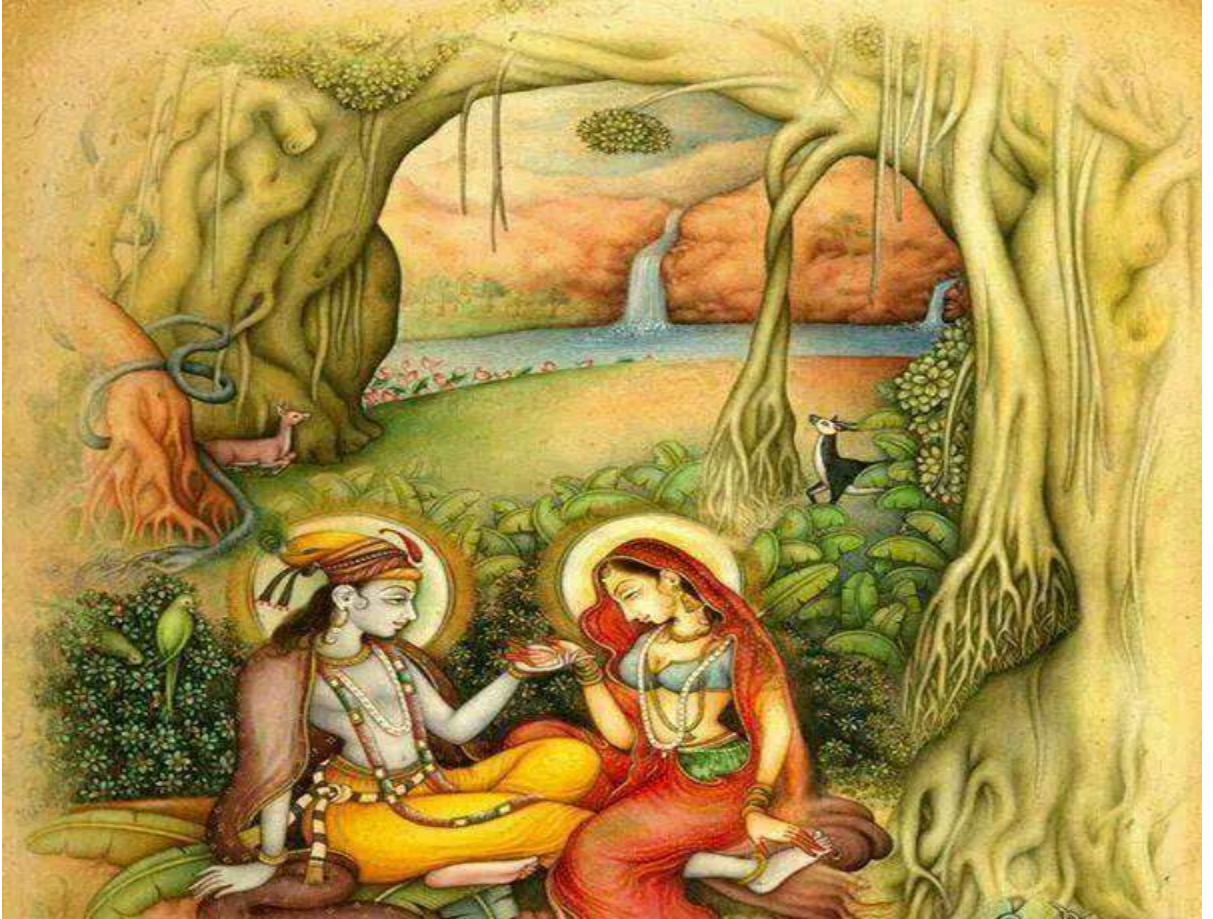
"निधि स्वरुप" क्या है? क्युं है?

किसे कहते है?

"Vibrant Pushti"
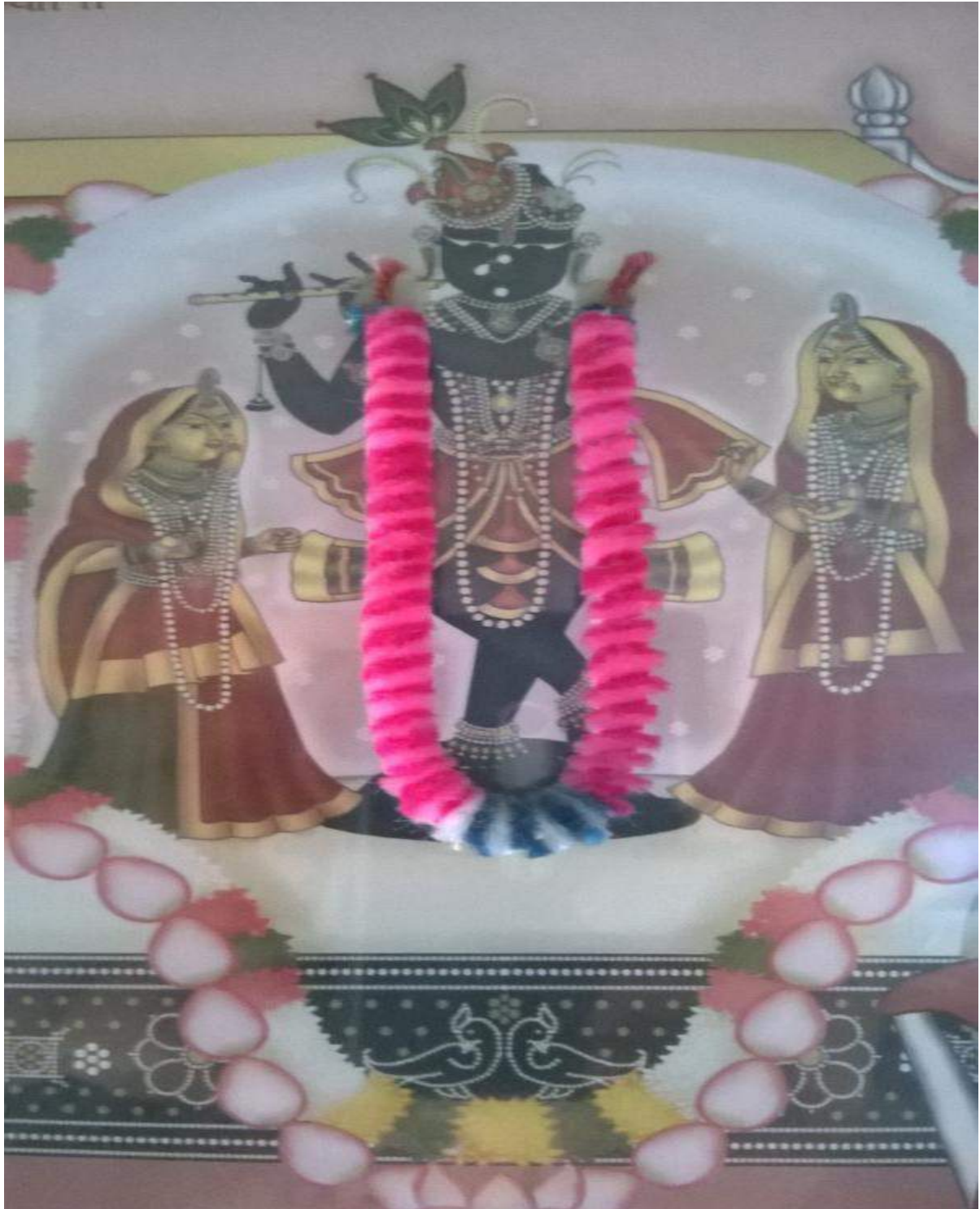
जीवन की हर परिक्षा में एक ज्योत प्रकट होती है। यह ज्योत धीरे धीरे ऐसी द्रढ हो जाती है कि जब कोई ऐसी परिस्थिति जागे तो यही ज्योत हमें ऐसा सहारा देती है कि ऐसी परिस्थिति में हम सरलता ही पाये।

"Vibrant Pushti"

श्री वल्लभ वल्लभ स्मरण धरो

श्री वल्लभ वल्लभ नाम भजो

श्रीकृष्ण और श्रीराधा में कौन सर्वोत्तम?

श्रीकृष्ण और श्रीराधा कि तुलना ही नहीं हो सकती है। कयुं?

श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण है और श्रीराधा श्रीराधा है। कयुं?

श्रीकृष्ण ही श्रीराधा है और श्रीराधा ही श्रीकृष्ण है। कयुं?

श्रीकृष्ण और श्रीराधा में परप पूर्ण परम उत्तमोत्तम केवल श्रीकृष्ण है।

श्रीकृष्ण और श्रीराधा कि तुलना अवश्य करनी चाहिए, पर अलौकिकता से परम माधुर्य से, परम सर्व श्रेष्ठ शक्ति से, परम स्नेह कृपा से, परम वीर वीर्य से, परम श्रेष्ठ संचालन से, परम श्रेष्ठ कर्म से, परम श्रेष्ठ पुरुषार्थ से करनी चाहिए।

श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण ही है और श्रीराधा श्रीराधा ही है।

श्रीकृष्ण ही श्रीराधा है और श्रीराधा में ही श्रीकृष्ण है और श्रीराधा ही श्रीकृष्ण है।

"Vibrant Pushti"

जीवन पथ पर कहीं राही मीलते है और बिछडते है।

यही राही में साथी कौन वह खुद के उपर ही आधारित है।

राह - साथ और हम पहचानने के लिये ही हमें संस्कार, शिक्षण और धर्म को समझते है।

खुद को ही अपनाना है और खुद को ही जागना है।

"Vibrant Pushti"

श्री यमुना यमुना स्मरण धरो

श्री यमुना यमुना नाम भजो

श्री श्यामा श्यामा स्मरण धरो

श्री श्यामा श्यामा नाम भजो

जीवन में अमृत की धारा कितनी तरह से बहती है, हर धारा सनमानीय है, हर धारा में अखूट भंडार भरे है।

वह धारा है ममता।

वह धारा है वात्सल्य।

वह धारा है करुणा।

वह धारा है दया।

वह धारा है माफी।

वह धारा है मित्रता।

वह धारा है ज्ञान।

वह धारा है भाव।

वह धारा है विश्वास।

वह धारा है प्रीत।

तो भी हम लाचार, विवश, विवेकहीन, विध्वंशी, विकृत, संतापी, दुखी, निर्दयी, स्वार्थी, क्रोधी, अहंकारी, अज्ञानी, नासमझ क्युं?

क्योंकि वह धारा को समझने की क्षमता हम खो बैठे है।

यही धाराओं का हमने साधन बना लिया है।

जो केवल अंदर से प्रकट होती है। जो हमने यान्त्रिक बनादी है।

ऑह! श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

कभी अक्षर तुटते हुये देखा है?

कभी स्वर तुटते हुये देखा है?

कभी जल आग लगाये देखा है?

कभी बरखा आग लगाये देखा है?

कभी आसमान पिघलते देखा है?

कभी पर्वत पिघलते देखा है?

कभी सागर को डूबते देखा है?

कभी जंगल को डूबते देखा है?

कभी मन को छूटते देखा है?

कभी काल को छूटते देखा है?

कभी महेंक को रुकते देखा है?

कभी संगीत को रुकते देखा है?

कभी पैड को तडपता देखा है?

कभी चंद्र को तडपता देखा है?

"Vibrant Pushti"

एक व्यक्ति हर रोज मंगला दर्शन अपने नजदीकी मंदिर में करता है और फिर अपने नित्य जीवन कार्य में लग जाता है। कहीं वर्ष तक यह नियम होता रहा।

एक दिन ऐसे ही वह मंदिर पहुँचा तो मंदिर के श्री प्रभु के द्वार बंध पाये। वह आकुल व्याकुल हो गया। अरे ऐसा कैसे हो सकता है?

समयानुसार हुए भी ऐसा! उन्हें अति खेद पहुंचा। वह नजदीकी ऐक जगह पर बैठ गया। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे, और आंतरिक पुकार उठी।

ओ मुझसे कहाँ लगी इती देर अरे ओ साँवरिया!

साँवरिया साँवरिया मेरे मन बसिया।

बहते आंसू और दिल की बैचेनी ने उन्हें तडपता कर दिया। पूरे तन में विरह की आग।

इतने में कहीं से पुकार आयी

ओ तुने कहाँ लगायी इती देर अरे ओ बांवरिया! बांवरिया! बांवरिया मेरे प्रिय प्यारा!

वह आसपास देखने लगा, कौन पुकारता है? पर न कोई आस और न कोई पास था। वह इधर उधर देखने लगा, पर न कोई था। वह बैचेन हो कर बेहोश हो गया।

काफी देर हुई, उनके पैर को जल की धारा छूने लगी, और वह होश में आ गया। वह सोचने लगा यह जल आया कहां से? धीरे धीरे उठ कर वह जल के स्त्रोत को ढूंढने लगा तो देखा कि वह स्त्रोत श्री प्रभु के द्वार से आता है।

इतने में फिर से आवाज आई

ओ तुने क्युं लगायी इती देर अरे ओ बांवरिया!

वह सोच में पड गया! यह क्या!

यह कौन पुकारता है? यहाँ न कोई है? तो यह पुकार कैसी?

वह फूट फूट कर रोने लगा।

कहने लगा - प्रभु! ओ प्रभु!

और फिर से बेहोश हो गया।

बेहोशी में उन्होंने श्रीप्रभु के दर्शन पाया और उनका मुखडा आनंद पाने लगा। उनके चेहरे की आभा तेज होने लगी।

इतने में मंदिर में आरती का घंटारव बजा।आये हूऐ दर्शनार्थी ने उन्हें जगाया।

उन्होंने श्रीप्रभु के जो दर्शन पाया।

ओहहह! वहीं दर्शन थे जो उन्होंने बेहोशी में पाया था।

इतने में उनकी नजर श्रीप्रभु के नयनों पर पहुंची, और वह स्थिर हो गया। श्रीप्रभु के नयनों में आंसू! ओहहह! वह अति गहराई में जा पहुँचा।।।।

ओहहह! जो जल मुझे स्पर्श किया था वह श्रीप्रभु के अश्रु! नहीं नहीं! मुझसे यह क्या हो गया? श्रीप्रभु को कष्ट! वह बहुत रोया और बार बार क्षमा माँगने लगा। श्रीप्रभु ने मुस्कराते दर्शन से कहा, तुने कयुं करदी देर? अरे अब पल की भी न करना देर ओ मेरे बांवरिया!

"जय श्री वल्लभ"

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"

श्री वल्लभाचार्यजी अपनी प्रथम भूतल प्रदक्षिणा कर रहे थे तब श्री यमुनाजी के सानिध्य में रात को गोविंद घाट पर रात को जगत के जीव तत्वों का उद्धार करने चिंतित थे और बार बार व्याकुल हो रहे थे तब परम ब्रह्म श्री प्रभु का प्राकट्य हुआ और कहा वल्लभ! क्यूं चिंतित होते हो, तुम्हारा प्राकट्य को निरर्थक नहीं होगा।

हम आपको पद्धति प्रदान करते है जिससे आप जो भी जीव तत्व का अंगीकार करोगे वह जीव तत्वको हम अपनायेंगे।

तब ही श्री वल्लभ के अंतर आत्मा से जो प्रथम सूत्र का प्राकट्य हुआ और उनका सर्वत्र पुकार उठा

"जय श्री कृष्ण"!

"Vibrant Prushti"

जगत में आये है, जगत के कितने ही तत्वों से स्पर्श पाते है। इनमें कोई कोई आत्मीय तत्वों से हम आत्मीयता से जुडते है। वहीं आत्मीय तत्वों से खुद का सिंचन करते है और अपनी आत्मा को तेजोमय करते रहते है।

सत्य है और इससे ही हम खुद को पहचानते है और सृष्टि को, प्रकृति को और परम ब्रह्म को भी साथ जुडते जुडते अनोखी कक्षा घडते है।

यही हमारा उत्तम जीवन है और यही हमारा कर्तव्य है।

हम यही क्रियाओं पृथक्करण करते है?

"Vibrant Pushti"

श्री विट्ठल विट्ठल स्मरण धरो

श्री विट्ठल विट्ठल नाम भजो

हर नजर श्याम को ढूंढे

हर पुकार श्याम को पुकारे

तो

हर नजारा में श्याम को देखुं

हर स्वर में श्याम को सुनुं

तो

श्याम श्याम हो जाये सारा

श्याम श्याम हो जाये हमारा

तो

श्याम श्याम दौड के आये

श्याम श्याम से हम हो जाये श्यामा।

"Vibrant Pushti":

"वैकुंठ" कोई जा कर आया है?

श्री दयारामजी जा कर आये थे।

मेरे ख्याल से अभी भी कोई जा कर आये होंगे!

आप सर्वे से विनंती करता हूँ, अगर कोई आपके दर्शनमें, किसीके सानिध्य में आप हो तो हमें चोककस कहिये।

"Vibrant Pushti"

गोपी गीत भावार्थ सहित

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्ष: स्थले कौस्तुभं।

नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणु: करे कंकणं॥

भावार्थ:- हे श्रीकृष्ण! आपके मस्तक पर कस्तूरी तिलक सुशोभित है। आपके वक्ष पर देदीप्यमान कौस्तुभ मणि विराजित है, आपने नाक में सुंदर मोती पहना हुआ है, आपके हाथ में बांसुरी है और कलाई में आपने कंगन धारण किया हुआ है।

सर्वांगे हरि चन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावली।

गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणि:॥

भावार्थ:- हे हरि! आपकी सम्पूर्ण देह पर सुगन्धित चंदन लगा हुआ है और सुंदर कंठ मुक्ताहार से विभूषित है, आप सेवारत गोपियों के मुक्ति प्रदाता हैं, हे गोपाल! आप सर्व सौंदर्य पूर्ण हैं, आपकी जय हो।

जयति तेऽधिकं जन्मना ब्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।

दयित दृश्यतां दिक्षु तावका स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते॥ (१)

भावार्थ:- हे प्रियतम प्यारे! तुम्हारे जन्म के कारण वैकुण्ठ आदि लोको से भी अधिक ब्रज की महिमा बढ गयी है, तभी तो सौन्दर्य और माधुर्य की देवी लक्ष्मी जी स्वर्ग छोड़कर यहाँ की सेवा के लिये नित्य निरन्तर यहाँ निवास करने लगी हैं। हे प्रियतम! देखो तुम्हारी गोपीयाँ जिन्होने तुम्हारे चरणों में ही अपने प्राण समर्पित कर रखे हैं, वन-वन मे भटककर तुम्हें ढूँढ़ रही हैं। (१)

शरदुदाशये साधुजातसत् सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।

सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः॥ (२)

भावार्थ:- हे हमारे प्रेम पूरित हृदय के स्वामी! हम तुम्हारे बिना मोल की दासी हैं, तुम शरद ऋतु के सुन्दर जलाशय में से चाँदनी की छटा के सौन्दर्य को चुराने वाले नेत्रों से हमें घायल कर चुके हो। हे प्रिय! अस्त्रों से हत्या करना ही वध होता है, क्या इन नेत्रों से मारना हमारा वध करना नहीं है। (२)

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।

वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः॥ (३)

भावार्थ:- हे पुरुष शिरोमणि! यमुना जी के विषैले जल से होने वाली मृत्यु, अज़गर के रूप में खाने वाला अधासुर, इन्द्र की बर्षा, आकाशीय बिजली, आँधी रूप त्रिणावर्त, दावानल अग्नि, वृषभासुर और व्योमासुर आदि से अलग-अलग समय पर सब प्रकार भयों से तुमने बार-बार हमारी रक्षा की है। (३)

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।

विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले॥ (४)

भावार्थ:- हे हमारे परम-सखा! तुम केवल यशोदा के पुत्र ही नहीं हो, तुम तो समस्त शरीर धारियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से रहने वाले साक्षी हो। हे सखा! ब्रह्मा जी की प्रार्थना से विश्व की रक्षा करने के लिये तुम यदुवंश में प्रकट हुए हो। (४)

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।

करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम्॥ (५)

भावार्थ:- हे यदुवंश शिरोमणि! तुम अपने प्रेमियों की अभिलाषा को पूर्ण करने में सबसे आगे रहते हो, जो लोग जन्म-मृत्यु रूप संसार के चक्कर से डरकर तुम्हारे चरणों की शरण ग्रहण करते हैं, उन्हे तुम्हारे करकमल अपनी छत्र छाया में लेकर अभय कर देते हैं। सबकी लालसा-अभिलाषा को पूर्ण करने वाला वही करकमल जिससे तुमने लक्ष्मी जी का हाथ पकड़ा है। हे प्रिय! वही करकमल हमारे सिर पर रख दो। (५)

व्रजजनार्तिहन्वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित।

भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय॥ (६)

भावार्थ:- हे वीर शिरोमणि श्यामसुन्दर! तुम तो सभी ब्रजवासियों के दुखों को दूर करने वाले हो, तुम्हारी मन्द-मन्द मुस्कान की एक झलक ही तुम्हारे प्रेमीजनों के सारे मान मद को चूर-चूर कर देने के लिये पर्याप्त है। हे प्यारे सखा! हम से रूठो मत, प्रेम करो, हम तो तुम्हारी दासी हैं, तुम्हारे चरणों में निछावर हैं, हम अबलाओं को अपना वह परम सुन्दर साँवला मुखकमल दिखलाओ। (६)

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।

फणिफणार्पितं ते पदांबुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम्॥ (७)

भावार्थ:- तुम्हारे चरणकमल शरणागत प्राणीयों के सारे पापों को नष्ट कर देते हैं, लक्ष्मीजी सौन्दर्य और माधुर्य की खान हैं, वह जिन चरणों को अपनी गोद में रखकर निहारा करती हैं, वह कोमल चरण बछड़ों के

पीछे-पीछे चल रहे हैं, उन्ही चरणों को तुमने कालियानाग के शीश पर धारण किया था, तुम्हारी विरह की वेदना से हृदय संतप्त हो रहा है, तुमसे मिलन की कामना हमें सता रही है। हे प्रियतम! तुम उन शीतलता प्रदान करने वाले चरणों को हमारे जलते हुए वक्ष:स्थल पर रखकर हमारे हृदय की आग्नि को शान्त कर दो। (७)

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।

विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः॥ (८)

भावार्थ:- हे कमलनयन! तुम्हारी वाणी कितनी मधुर है, तुम्हारा एक-एक शब्द हमारे लिये अमृत से बढ़कर मधुर हैं, बड़े-बड़े विद्वान तुम्हारी वाणी से मोहित होकर अपना सर्वस्व निछावर कर देते हैं। उसी वाणी का रसास्वादन करके तुम्हारी आज्ञाकारिणी हम दासी मोहित हो रहीं है। हे दानवीर! अब तुम अपना दिव्य अमृत से भी मधुर अधर-रस पिलाकर हमें जीवन दान दो। (८)

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।

श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः॥ (९)

भावार्थ:- हे हमारे स्वामी! तुम्हारी कथा अमृत स्वरूप हैं, जो विरह से पीड़ित लोगों के लिये तो वह जीवन को शीतलता प्रदान करने वाली हैं, ज्ञानीयों, महात्माओं, भक्त कवियों ने तुम्हारी लीलाओं का गुणगान किया है, जो सारे पाप-ताप को मिटाने वाली है। जिसके सुनने मात्र से परम-मंगल एवं परम-कल्याण का दान देने वाली है, तुम्हारी लीला-कथा परम-सुन्दर, परम-मधुर और कभी न समाप्त होने वाली हैं, जो तुम्हारी लीला का गान करते हैं, वह लोग वास्तव में मत्यु-लोक में सबसे बड़े दानी हैं। (९)

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम्।

रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि॥ (१०)

भावार्थ:- हे हमारे प्यारे! एक दिन वह था, तुम्हारी प्रेम हँसी और चितवन तथा तुम्हारी विभिन्न प्रकार की क्रीड़ाओं का ध्यान करके हम आनन्द में मग्न हो जाया करतीं थी। हे हमारे कपटी मित्र! उन सब का ध्यान करना भी मंगलदायक है, उसके बाद तुमने एकान्त में हृदयस्पर्शी ठिठोलियाँ की और प्रेम की बातें की, अब वह सब बातें याद आकर हमारे मन को क्षुब्ध कर रही हैं। (१०)

चलसि यद्व्रजाच्चारयन्पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्।

शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति॥ (११)

भावार्थ:- हमारे प्यारे स्वामी! तुम्हारे चरण कमल से भी कोमल और सुन्दर हैं, जब तुम गौओं को चराने के लिये ब्रज से निकलते हो तब यह सोचकर कि तुम्हारे युगल चरण कंकड़, तिनके, घास, और काँटे चुभने से कष्ट पाते होंगे तो हमारा मन बहुत वेचैन हो जाता है। (११)

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम्।

घनरजस्वलं दर्शयन्मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि॥ (१२)

भावार्थ:- हे हमारे वीर प्रियतम! दिन ढलने पर जब तुम वन से घर लौटते हो तो हम देखतीं हैं, कि तुम्हारे मुखकमल पर नीली-नीली अलकें लटक रहीं है और गौओं के खुर से उड़-उड़कर घनी धूल पड़ी हुई है। तुम अपना वह मनोहारी सौन्दर्य हमें दिखाकर हमारे हृदय को प्रेम-पूरित करके मिलन की कामना उत्पन्न करते हो। (१२)

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।

चरणपङ्कजं शंतमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्॥ (१३)

भावार्थ:- हे प्रियतम! तुम ही हमारे सारे दुखों को मिटाने वाले हो, तुम्हारे चरणकमल शरणागत भक्तों की समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली हैं, इन चरणों के ध्यान करने मात्र से सभी ब्याधायें शान्त हो जाती हैं। हे प्यारे! तुम अपने उन परम-कल्याण स्वरूप चरणकमल हमारे वक्षःस्थल पर रखकर हमारे हृदय की व्यथा को शान्त कर दो। (१३)

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।

इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम्॥ (१४)

भावार्थ:- हे वीर शिरोमणि! आपका अधरामृत तुम्हारे स्मरण को बढ़ाने वाला है, सभी शोक-सन्ताप को नष्ट करने वाला है, यह बाँसुरी तुम्हारे होठों से चुम्बित होकर तुम्हारा गुणगान करने लगती है। जिन्होने इस अधरामृत को एक बार भी पी लिया तो उन लोगों को अन्य किसी से आसक्तियों का स्मरण नहीं रहता है, तुम अपना वही अधरामृत हम सभी को वितरित कर दो। (१४)

अटति यद्भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।

कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद्दृशाम्॥ (१५)

भावार्थ:- हे हमारे प्यारे! दिन के समय तुम वन में विहार करने चले जाते हो, तब तुम्हें देखे बिना हमारे लिये एक क्षण भी एक युग के समान हो जाता है, और तुम संध्या के समय लौटते हो तथा घुंघराली अलकावली से युक्त तुम्हारे सुन्दर मुखारविन्द को हम देखती हैं, उस समय हमारी पलकों का गिरना हमारे लिये अत्यन्त कष्टकारी होता है, तब ऎसा महसूस होता है कि इन पलकों को बनाने वाला विधाता मूर्ख है। (१५)

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।

गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि॥ (१६)

भावार्थ:- हे हमारे प्यारे श्यामसुन्दर! हम अपने पति, पुत्र, सभी भाई-बन्धु और कुल परिवार को त्यागकर उनकी इच्छा और आज्ञाओं का उल्लंघन करके तुम्हारे पास आयी हैं। हम तुम्हारी हर चाल को जानती हैं, हर संकेत को समझती हैं और तुम्हारे मधुर गान से मोहित होकर यहाँ आयी हैं। हे कपटी! इसप्रकार रात्रि को आयी हुई युवतियों को तुम्हारे अलावा और कौन छोड़ सकता है। (१६)

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।

बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः॥ (१७)

भावार्थ:- हे प्यारे! एकान्त में तुम मिलन की इच्छा और प्रेमभाव जगाने वाली बातें किया करते थे, हँसी-मजाक करके हमें छेड़ते थे, तुम प्रेम भरी चितवन से हमारी ओर देखकर मुस्करा देते थे। तुम्हारा विशाल वक्ष:स्थल, जिस पर लक्ष्मीजी नित्य निवास करती हैं। हे प्रिय! तब से अब तक निरन्तर हमारी लालसा बढ़ती ही जा रही है और हमारा मन तुम्हारे प्रति अत्यधिक आसक्त होता जा रहा है। (१७)

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।

त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम्॥ (१८)

भावार्थ:- हे प्यारे! तुम्हारी यह अभिव्यक्ति ब्रज-वनवासियों के सम्पूर्ण दुख-ताप को नष्ट करने वाली और विश्व का पूर्ण मंगल करने के लिये है। हमारा हृदय तुम्हारे प्रति लालसा से भर रहा है, कुछ ऎसी औषधि प्रदान करो जो तुम्हारे भक्तजनों के हृदय-रोग को सदा-सदा के लिये मिटा दे। (१८)

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।

तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः॥ (१९)

भावार्थ:- हे श्रीकृष्ण! तुम्हारे चरण कमल से भी कोमल हैं, उन्हे हम अपने कठोर स्तनों पर भी डरते-डरते बहुत धीरे से रखती हैं, जिससे आपके कोमल चरणों में कहीं चोट न लग जाये, उन्हीं चरणों से तुम रात्रि के समय घोर जंगल में छिपे हुए भटक रहे हो, क्या कंकण, पत्थर, काँटे आदि की चोट लगने से आपके चरणों मे पीड़ा नहीं होती? हमें तो इसकी कल्पना मात्र से ही अचेत होती जा रही हैं। हे प्यारे श्यामसुन्दर! हे हमारे प्राणनाथ! हमारा जीवन तुम्हारे लिये है, हम तुम्हारे लिये ही जी रहीं है, हम सिर्फ तुम्हारी ही हैं। (१९)

"Vibrant Pushti"

"वैकुंठ" श्री दयारामजी तो जा कर आये थे। और अभी श्री श्री रविशंकरजी और श्री प्रमुखस्वामि महाराज जा कर आये है।

"वैकुंठ" का अनुभूति अर्थ है - जहां किसी भी प्रकार का वितर्क न हो, संशय न हो, अशुद्धियाँ न हो, अविद्या न हो।

जहां केवल विशुद्धता हो, पवित्रता हो, सौंदर्यता हो, परमानंद हो।

यही स्थली "वैकुंठ" है।

"Vibrant Pushti"
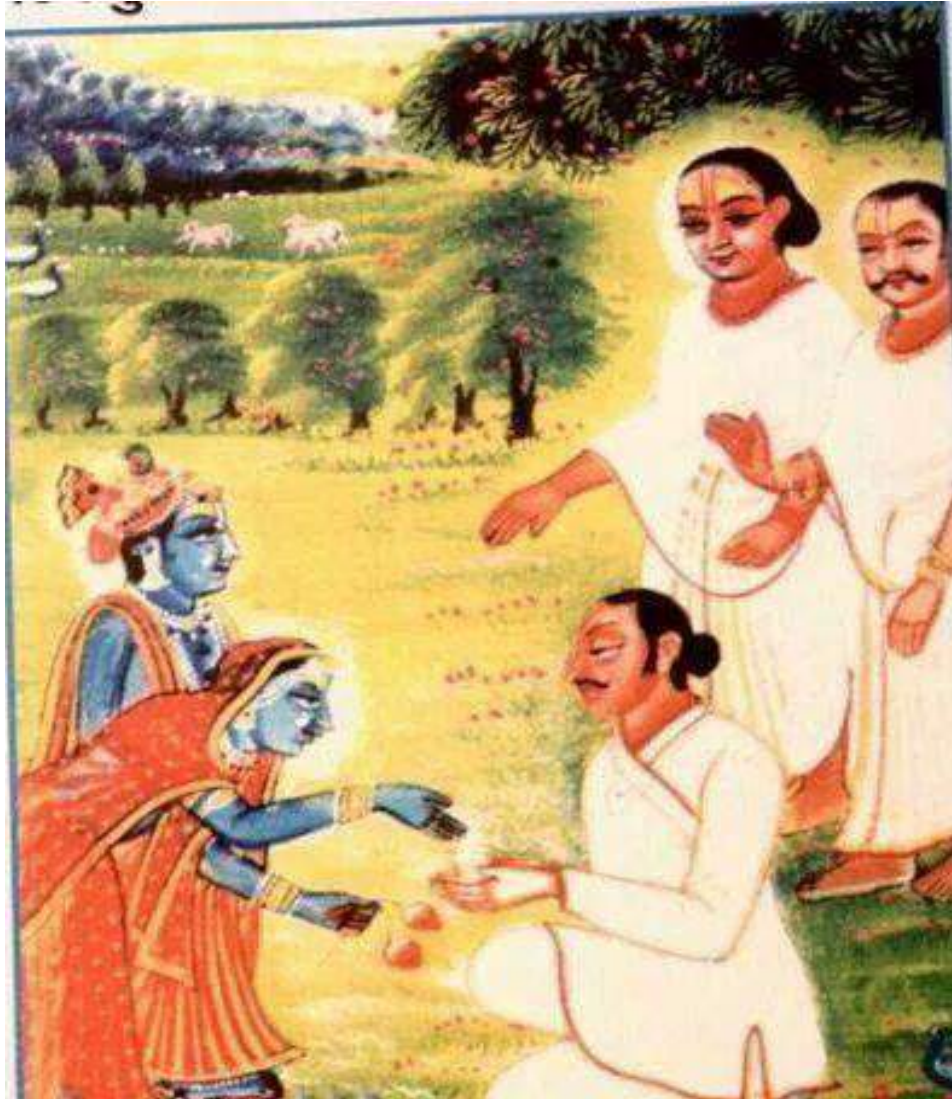
"दीनता" मनुष्य जीवन का एक अलौकिक आभूषण। इनको धारण करने से श्रीदयानिधि या ने श्रीप्रभु हमारे निकट आते है।

"दीनता" को धारण करने के लिये हमें हमारे दोषों को अति सूक्ष्मता से दूर करने होते है। यह दोष कैसे दूर करते है?

यह दोषों केवल श्री प्रभु दर्शन, स्मरण, सेवा और योग्य साक्षरता से होता है।

जैसे योग्य साक्षरता जागृत होती है, वैसे श्रीप्रभु कृपा भी बरसती है। अपने में दैन्य भाव जागृत होता है, यही भाव कि द्रढ़ता हममें दीनता प्रदान करती है।

हम धन्य हो जाते है।

"Vibrant Pushti"
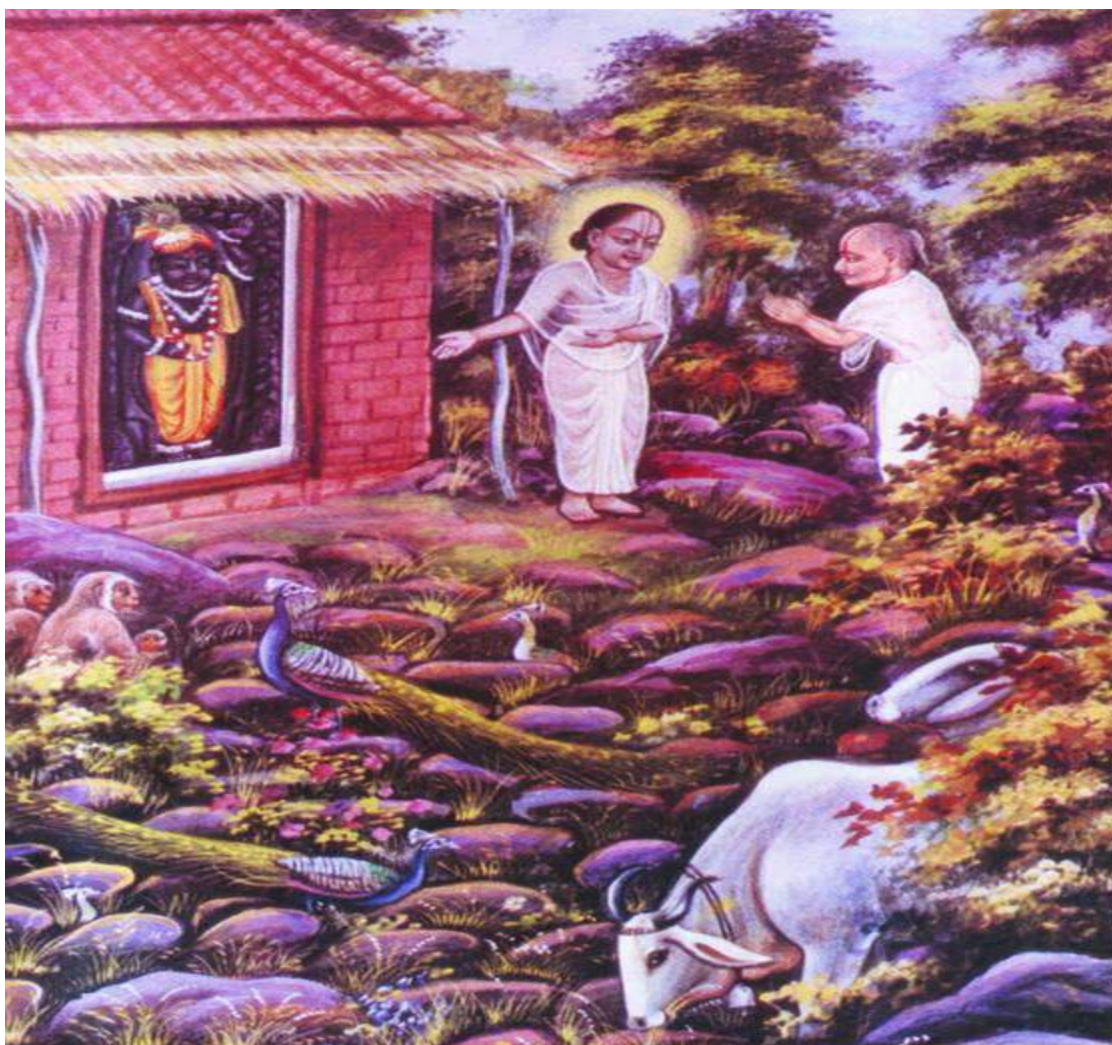
आज एकादशी है। एक सत्य आप सर्वे के चरण में रख रहा हूँ।

मंदिर, सेवा, यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठान में हम

श्री प्रभु मूर्ति, चित्रजी, या कोई विग्रह कि स्थापना, पूजा, अर्चना, अभिषेक करते है।

क्या वह कभी प्रकट हुए?

ना।

क्यूं नही हुए?

सर्व कहते है यह श्रद्धा, निष्ठा, और विश्वास की अनुभूति है।

ठीक है। थोडा सत्य है।

हमें तो पूर्ण सत्य और प्रमाणित सत्य से प्रकट करके स्थापना, पूजा, अर्चना, अभिषेक करना है।

अवश्य कर सकते है।

हम सर्वे से विनंती करते है, अपने महाराज के पास से समझ के हमें कहो।

हम सर्वे को कहते है कि हम सर्वे श्रीप्रभु का साक्षात्कार जतायेंगे।

"Vibrant Pushti"

"प्रेम" क्या है? क्यूँ है? कैसा है? क्यूँ करते है?

नहीं नहीं इसके लिए न कोई प्रश्न है।

है है और है।

न कोई देख सकता है, न कोई कहे सकता है, न कोई पहचान करा सकता है।

न कोई तोड सकता है, न कोई छोड सकता है, न कोई भूल सकता है। न कोई दुख होता है, न सुख होता है, न कोई भाव है, न कोई संदेह है, न कोई अधिकार है, न किसीका होता है, न किसीका हो सकता है, न कोई प्रमाण है।

न कोई मोह होता है, न कोई स्वार्थ होता है, न कोई व्यवहार है, न कोई पद्धति है। न कोई तन से छूता है, न कोई मन से छूता है, न कोई इंद्रियों से छूता है, केवल आत्मीय ज्योति से ही स्पर्शता है।

न इसे काल का बंधन है, न कोई माया का बंधन है, प्रेम तो सर्वत्र व्याप्त है, सर्वज्ञ है।

निडर है, विशुद्ध है, निर्मल है, विश्वास है,

जीव सृष्टि की यह ऐसी रचना है जो केवल अनुभूत कर सकते है और सत्य से स्पर्श कर सकते है। प्रेम सदा साथ ही होता है - याद से, विचार से, अक्षर से, प्रकृति से। यह अप्राकृत सत्य ही हम हमारा जीवन को आनंदमय कर सकते है।

यह आकाश प्रेम है, यह धरती प्रेम है, यह सूर्य प्रेम है, यह सागर प्रेम है, यह वनस्पति प्रेम है, यह संगीत प्रेम है, हर तत्व प्रेम है।

"Vibrant Pushti"

क्या सोचते है पल पल

क्या करते है हर पल

क्या कभी ऐसा किया है कोई पल

की "कान्हा" क्या करता है हर पल?

नहीं करते है हम ऐसे हर पल

क्यूँकी करते है मन मानी हर पल

तो "कान्हा क्यूँ करे हमारा हर पल!

"Vibrant Pushti"

परम सत्य कहते है।

हम हर अक्षर के भिन्न अर्थ करते है।

हम हर विचार के अलग अलग अर्थ करते है।

हम हर नजर के अलग अलग अर्थ करते है।

हम तो हर स्पर्श का अलग अलग अर्थ करते है।

हम हर क्रिया का अलग अलग अर्थ करते है।

तो क्या समझ पायेंगे? कैसे समझ पायेंगे? और कैसे कर पायेंगे?

हमें सही में जीना है और समझना है तो जो योग्य और सत्य है वोही समझे और करे तो बहुत कुछ पहचानेंगे।

यही कर्म की रीत है।

"Vibrant Pushti"

याद वही है जो याद है।

याद वही आता है जिसे हम याद करते है।

याद यु ही बहती है जहां तक हम याद करते है।

याद ही पुकारती है जो हमें पुकारते है।

याद से याद जागती है।

याद से मिलन होता है।

याद औषधि है जो अंतर रोग मिटाता है।

याद से जो प्रकट होता है वह अमूल्य है।

याद में दूरी ही नहीं है।

याद से जो मिलता है वह सामने हो कर भी नही मिलता।

याद से जुडते है वह तुटते नही।

याद खुद ही एक गहरा रिश्ता है।

याद में जो खो जाते है वह समाधि में डूबते है।

याद से कुछ पाते ही है, खोते नही है।

याद से कहीं सर्जन होते है।

याद से संकल्प बळ खिलता है।

याद से सिंचन होता है।

याद मे संस्कृति खिलती है।

याद मोह, माया से परे है।

याद हमारी पहचान है।

याद वेदना है पर सांत्वना भी है।

याद बरसती है और तरसती भी है।

याद रास्ता है और मुसाफिर भी है।

याद पल है।

याद है तो क्या नहीं है?

"Vibrant Prushti"

पलके खुलते ही हम चित्रजी या कोई तस्वीर का दर्शन करते है या देखते है।

क्यूं? क्या कुछ पाते है या कुछ अनुभव करते है?

अपनी आंतरिकता से ही कहना।

क्यूँ की हम हर रोज कितने ही चित्रजी या तस्वीर का दर्शन करते है या देखते है।

नये नये चित्रजी या नयी नयी तस्वीरें क्या संकेत करती है? क्या कुछ जागता है या ऐसे ही?

हिन्दु संस्कृति में यह प्रणाली को क्या समझते है?

"Vibrant Pushti"

श्री नाथजी नाथजी स्मरण धरो

श्री नाथजी नाथजी नाम भजो

जीवन में कहीं प्रकार की जीने की रीत है, कहीं प्रकार के संजोग है, कहीं प्रकार के नीति नियम है, कहीं प्रकार के विचारों है, कहीं प्रकार की क्रियायें है, कहीं प्रकार के समाज है, कहीं प्रकार की संस्कृति है, कहीं प्रकार के धर्म है।

क्यूं ऐसा? इसलिये क्या क्या होता है?

क्या इसके लिए क्या करे कि जिससे सब शांती से जीये, आनंद में जीये?

"Vibrant Pushti"

" राधा कृष्ण "

" श्यामा श्याम "

यह ब्रह्मांड में कहीं प्रकार के स्पंदन होते है, हम वहीँ प्रकार के स्पंदन आकृष्ट करते है जो स्पंदन हम घडते है या वह स्पंदन के हम है।

यह स्पंदन हमें कहीं कहीं प्रकार के कहीं कहीं से मिलते है। हमारा स्पंदन कोई पाता है और हम भी कितने स्पंदन पाते है।

स्पंदन की पहचान उन्हें ही होती है जिसे खुद की पहचान होती है। वह कहीं से भी खुद के लिये चाहिए इतना स्पंदन पा सकता है और दे भी सकता है। स्पंदन हमारे जीवन का अभिन्न तरंग है।

"Vibrant Pushti"

श्याम से मोहब्बत है

बारिश क्यु मेरे अश्रु की एक बूंद ही काफी है।

श्याम से मोहब्बत है

सूरज नहीं है तो क्या मेरी आत्म ज्योत ही काफी है।

श्याम से मोहब्बत है

सांस तो क्या मेरे प्रीत की महेंक ही काफी है।

"Vibrant Pushti"

कहीं रीते, कहीं विडंबनाये, कहीं तकलीफों, कहीं मुसीबतों, कहीं परिस्थितियां, कहीं विचारों, कहीं असमंजसे, कहीं रास्ते, कहीं सूचनाएं, कहीं मार्गदर्शके, कहीं निर्णये, कहीं निर्देशे। क्यूँ?

क्या यही है जिन्दगी?

बस यहीं में ही जीना?

क्या यही है ये जीवन?

यही है हमारी पहचान?

यही है हमारा उद्देश्य?

यही है हमारा लक्ष्य?

नहीं।

हम तो सरलता करने है।

हम तो निर्मलता करने है।

हम तो समांतर करने है।

हम तो संयोजन करने है।

हम तो योग्यता करने है।

हम तो जागृतता करने है।

हम तो साथ साथ करने है।

हम तो एकात्मता करने है।

हम तो आनंद करने है।

"Vibrant Pushti"

"वल्लभ" यह नाम नहीं है,

यह सर्वज्ञता है।

सामर्थ्यता है।

सर्वथा है।

विशुद्धता है।

अद्वैत है।

"वल्लभ" का अर्थ है आनंद।

जो "वल्लभ" के है वह कौन है?

"Vibrant Pushti"

हमें श्री प्रभु प्रत्ये प्रीति क्यूँ?

हम कोई प्रत्यक्ष और योग्यता को प्रीत करे तो अनुचित और अप्रत्यक्ष को प्रीत करे तो उचित। यह समझ क्यूँ?

"Vibrant Pushti"

हमें श्रीप्रभु प्रत्ये प्रीति इसलिये है कि श्रीप्रभु हमें प्रीत करते है, हम अनेक है पर वह हमसे समांतर प्रीत करते है। अप्रत्यक्ष होते हुए भी करते है और हमें बार बार उसकी अनुभूति होती है - प्रकृति द्वारा। हर पल हमें कुछ न कुछ रीत से तो स्पर्श करता ही है।जैसे कहीं प्रकार के संकेत, विचार, जागृतता।

फूलों के रंग, फूलों की महक, जल की तरंग, हवा की लहरें, संगीत की धुन, चंद्र की शीतलता, सूर्य की किरणें, क्या है यह - अप्रत्यक्ष प्रीत है। एक एहसास है, एक संतोष है, एक आनंद की अनुभूति है।

सच में यह कैसी रीत है जो बिना कहे हम पीते है, हमारा संपूर्ण ख्याल। हर पल पुकारे - तु मेरा, तु मेरा। न कभी कोई खेवना - केवल विशुद्धता।

क्यूँ ऐसा - क्यूँकि वह हमसे है और हम उनसे है। वह सदा मैं न मैं हूँ - तुम न तुम हो - बस केवल हम है।

ओहह! अलौकिक!

कितनी अनोखी प्रीत!

हमारी अशुद्धियाँ को विशुद्ध करना

हमारे अवगुणों को सुधारना।

जगत के अवगुणों से रक्षा करना।

हमारी संस्कृति को जागृत करना।

हमसे न कभी बिछडना या मूंह मोडना। सदा साथ और विश्वास।

हमारे लिये प्रत्यक्ष होना।

ओहह! मेरे श्रीप्रभु! मेरे प्रियवर! मेरे प्रियतम!

मेरे लिये विभु से लघु होना।

मेरे स्व में भाव जगा के भक्त में परिवर्तन करना।

श्रीप्रभु अब नहीं सहा जाता।

कबतक - जबतक तुम्हें मुझमें न समाऊं।

ओहहह! प्रणाम!

श्री वल्लभ प्रणाम!

हे कृष्णा! हे कृष्णा!

"Vibrant Pushti"

बांसुरी से निकला दर्द केवल राधा ने सुना है, अगर हम सुन लेते तो कैसे होते?

"Vibrant Pushti"

"मित्रता" एक ऐसा सत्य है जो केवल और केवल सच्चे साथी हो।

कहीं बार सुना और पढा कि मित्र

दुख में साथ दे वह मित्र।

मुसीबतों में साथ खडा रहे वह मित्र।

तकलीफों को दूर करे वह मित्र।

जीवन सागर में डूबते हुए को सहारा दे वह मित्र।

कैसी भी विडंबना या परिस्थिति आये वह सदा पास हो वह मित्र।

खुद को मिटा दे वह मित्र।

ओहहह!

नहीं नहीं यह योग्य नहीं है।

"मित्रता"

अज्ञान में ज्ञान का सिंचन करे वह मित्र।

भटके हुए है तो सही रास्ते पर लाये वह मित्र।

सदा निर्दोष और निखालस हो वह मित्र।

मानसिक दुख में योग्यता समझायें वह मित्र।

भूले को सही रास्ता दिखाये वह मित्र।

पवित्र दृष्टि और निस्वार्थ वृत्ति हो वह मित्र।

असमंजस ना जताये, ना फैलाये और सही मार्गदर्शन करे वह मित्र।

जीवन की राह में सदा समांतर योग्यता का माध्यम हो वह मित्र।

सदा मित्रता के संबंध की महेंक फैलाये वह मित्र।

"Vibrant Pushti"

" हे मेरे मित्र "

याद करना, याद आना, यादों में रहना, यादों में खो जाना।

क्या है यह? क्यूँ है यह?

यह जीवन की ऐसी रीत है, जीवन की ऐसी प्रक्रिया है, जीवन की ऐसी प्रकृति है जिसमें हमारी कहानी है, कहीं धारा है, जिसमें हमारा बहुत कुछ है। याद हमारी धरोहर है। यादों में जीना यह एक शक्ति है, प्रेरणा है, सहारा है।

याद के बिना जीवन नहीं है।

याद प्रार्थना है,

याद सिंचन है,

याद महेंक है,

याद भक्ति है,

याद निर्माण है,

याद संबंध है,

याद है तो शास्त्र है,

याद है तो ज्ञान है,

याद प्रीत है।

याद है तो ईश्वर है, याद है तो हम है, याद है तो सृष्टि है।

"Vibrant Pushti"

हर अक्षर छूता है आत्मा को,

हर विचार छूते है आत्मा को,

हर सांस छूती है आत्मा को।

पर नहीं छूती ऐसी लागणी जो हम समाज के साथ और सामने जताते है।

हम खुद को खबर हो कर समाज को बेखबर करें तो हम भी कैसे और हमारा समाज भी कैसा?

जो भी करे जब भी करे हमें अवश्य छूता ही है - मन से, तन से और जीवन से।

आत्मा को छू ने हमें ही करना होता है। जो हर अक्षर से जागता है,

हर विचार से संकल्पित होता है,

जो सांस के परिवर्तन से छूता है।

"Vibrant Pushti"

ऐसे ही गरमी के दिन थे और राधाजी सोचने लगी कि कान्हा ऐसी धूप में खुद और गैया को भी चराता है, कैसा हाल होगा?

राधाजी अति व्याकुल हो गयी और तन मन में अजीब अजीब सा ख्याल करने लगी।

वह खुद निकल पडी गौचारण की जगह, तलाश करके थक गयी न मिला कान्हा और न मिली गौवे।

एक पैड के नीचे इंतजार करके बैठी बैठी पलके झुकाली।

थोडी देर में कान्हा गौवे के साथ वहां से जा रहा था और उनकी नजर राधाजी को छू गई, ओहहह!

राधा! यहाँ!

दौड के उनके पास पहुंचा तो नयनों भीगे थे और मुखडा फीका था।

कान्हा समज गया की यह मुझे ढूंढने आयी है। तुरंत अपने दुपट्टे से थंडी लहरें लहराने लगा, इतने में राधाजी ने करवट ली और कान्हा की नजर राधाजी के पैर पर अटक गई। ओहहह! कितने कोमल है यह चरन और मेरे लिये ऐसी धूप में! वह सहमा गया और तडपने लगा, उनके तन में अगन जलने लगी।

इतने में एक पंखी आया और राधाजी के चरनों को छू के उड गया। कान्हा की नजर तो चरनों पर ही टिकी थी, राधाजी के चरनों को चैन मिल गया और कान्हा को छूने का मन हो गया, पर सोचने लगा जैसे छूएं और राधा की नींद तूट जाये! बस यूँ ही बैठा रहा और बैठते बैठते नयनों से आंसू बहने लगे। बहते बहते राधाजी के चरनों को छू गया और राधाजी की पलकें खुल गयी, ओहहह! कान्हा! बैठ गयी कंधे से जोड कर कहा..... कान्हा! क्यूँ यह आंसू? इतनी धूप में तुम और तुम्हारी गैया! मुझसे सहा नहीं जाता है, कुछ करो।

कान्हा ने कहा यही है हम और यही है हमारा जीवन।

राधाजी ने कहा क्यूँ ऐसा कहते हो?

कान्हा ने कहा - हे राधा! तुम तो मेरे लिए हो पर यह गौवें के लिये कौन? उनके लिये तो मैं ही हूँ।

राधाजी ने कहा - नहीं नहीं! यह गौवें के लिये मैं भी हूँ।

कान्हा ने कहा कैसे?

तो राधाजी ने कहा यह पल से यह गौचारण की सर्वे स्थली पर हम हमारा आँचल बिछाते है, जहाँ भी यह गौ पहुंचे वहाँ मेरा आँचल।

तब से यह गैया अमृत हो गई।

और सारे देवताओं उनमें अपना स्थान बना कर सदा अमृत पान करते है।

मोहे वास सदा वृन्दावन कौ , मैं नित उठ जमुना पुलिन नहाऊँ ।

गिरि गोवर्धन की दऊँ परिकम्मा , दर्शन कर जीवन सफल बनाऊँ ॥

सेवाकुंज की करूँ आरती , ब्रज की रज में ही मिल जाऊं ।

ऐसी कृपा करो श्री स्वामिनी , वृन्दावन छोड़ बाहर नहिं जाऊं ॥

"Vibrant Pushti"

कान्हा मेरी गाँव में पैर रख कर टीपी देख तुम क्या महेसूस करते हो?

कान्हा मे विस्तार में पैर रख कर तो देख तुम क्या देखते हो?

कान्हा मेरी गली में पैर रख कर तो देख तुम क्या पाते हो?

कान्हा मेरे घर में पैर रख कर तो देख तुम क्या छूते हो?

कान्हा मेरी चौखट पर पैर रख कर तो देख तुम्हारा क्या स्वागत हो?

कान्हा मेरे नयन के सामने आ कर तो देख तुम क्या पीते हो?

कान्हा मेरे तन को स्पर्श करके तो देख तुम क्या अनुभवते हो?

कान्हा मेरे दिल में बिराज कर तो देख तुम कहां कहां बसे हो?

कान्हा मेरे चरण को छू के देख तुम क्या सुनते हो?

"Vibrant Pushti"
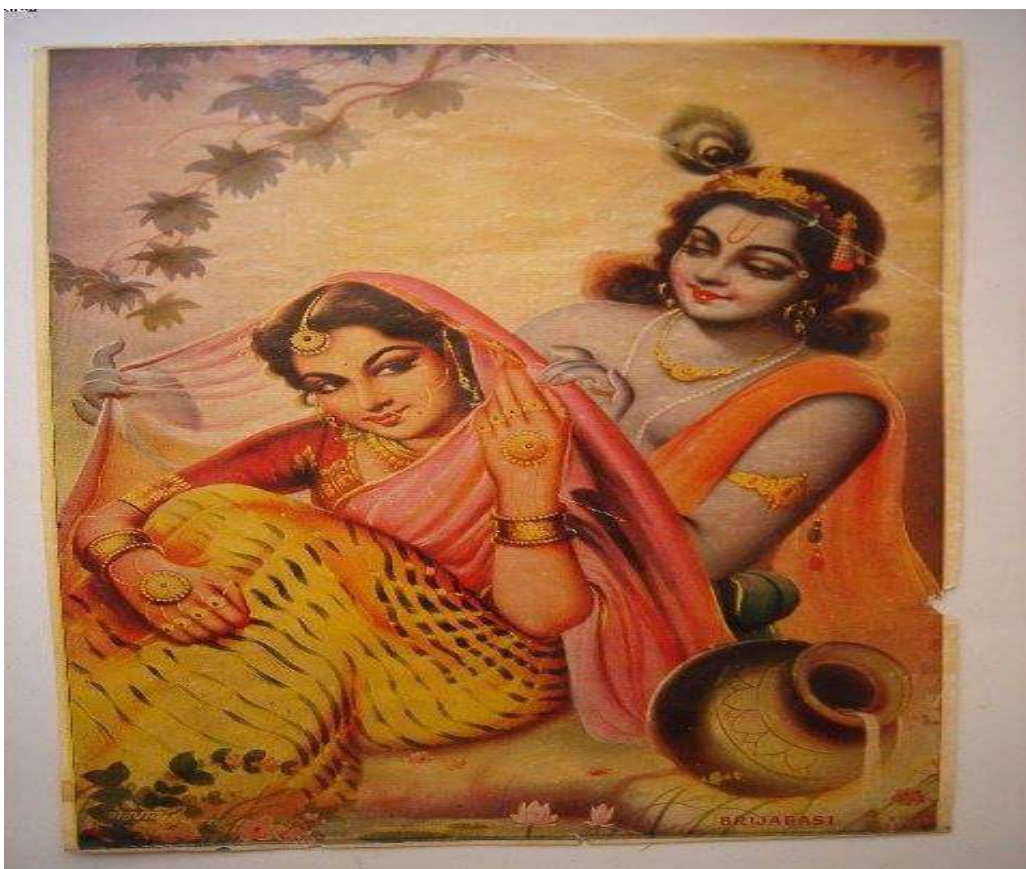
"तिलक" क्या है? क्यूँ है? और कौन कर सकता है?

"तिलक" ऐक सीमाचिह्न है।

यह चिह्न जो भी करे वह खुद का चारित्र्य, सामर्थ्य, सिद्धी, और संस्कृति का प्रतीक है।

"तिलक" सामर्थ्य है, साक्षर है, शुद्ध है, विशाल है, प्रगाढ ज्ञानी है, निर्मल भाव है, विशुद्ध चरित्र है, वंदनीय संस्कार है, सदा समर्पित जीवन है, योग्य शिक्षा प्रदान है।

आज के कोई हम जो समझते है, मानते है वह बालकों में नहीं है।

"तिलक" हम हमारी खुदकी संस्कृति, सभ्यता, साक्षरता, योग्यता, सामर्थ्यता, चारित्र्यता पर कर सकते ही है।

"तिलक" अपने ललाट में श्रीप्रभु के चरण चिह्न है, वह जागृत करना होता है।

हमारे तन का योग्य और परमोत्म स्थान है, चोककस है पर जब हम विशुद्ध हो, पवित्र हो, खुद की पहचान हो, हर विचार और क्रिया में निपुणता हो तब।

"Vibrant Pushti"

हमारे शास्त्रों में क्या लिखते है और हम कैसे अर्थ समझते है।

"गंगा दशहरा"

अपनी संस्कृति में सर्वोच्च स्थान।

हर बिंदु से मुक्ति। हर बिंदु अमृत।

हम उन्हें हमारी मान्यता से कैसे कैसे अर्थ में समझते है?

हर सोच का केवल फल में परिवर्तन।

कर्म करते जाव फल की इच्छा न रखो, तो भी वृत्ति।

नहीं नहीं।

"गंगा दशहरा" तो विशुद्धता की विशालता समझनी है।

यह दिन तो श्री मैया पूरे ब्रह्मांड को अपनी सामर्थ्यथता से शुद्ध करती है और सर्वे तत्वों को सिंचित करके अधिक पुरुषार्थ करने उत्कृष्ट करती है।

यही धारणा से हममें उन्हें अपनी अंदर प्रकट करना है। तब ही तो हमारे दोष और अवगुण नष्ट होंगे।

यही "गंगा दशहरा" का माहात्म्य है।

"Vibrant Pushti"

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि राधा कृष्ण अंक - प्रथम

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "